

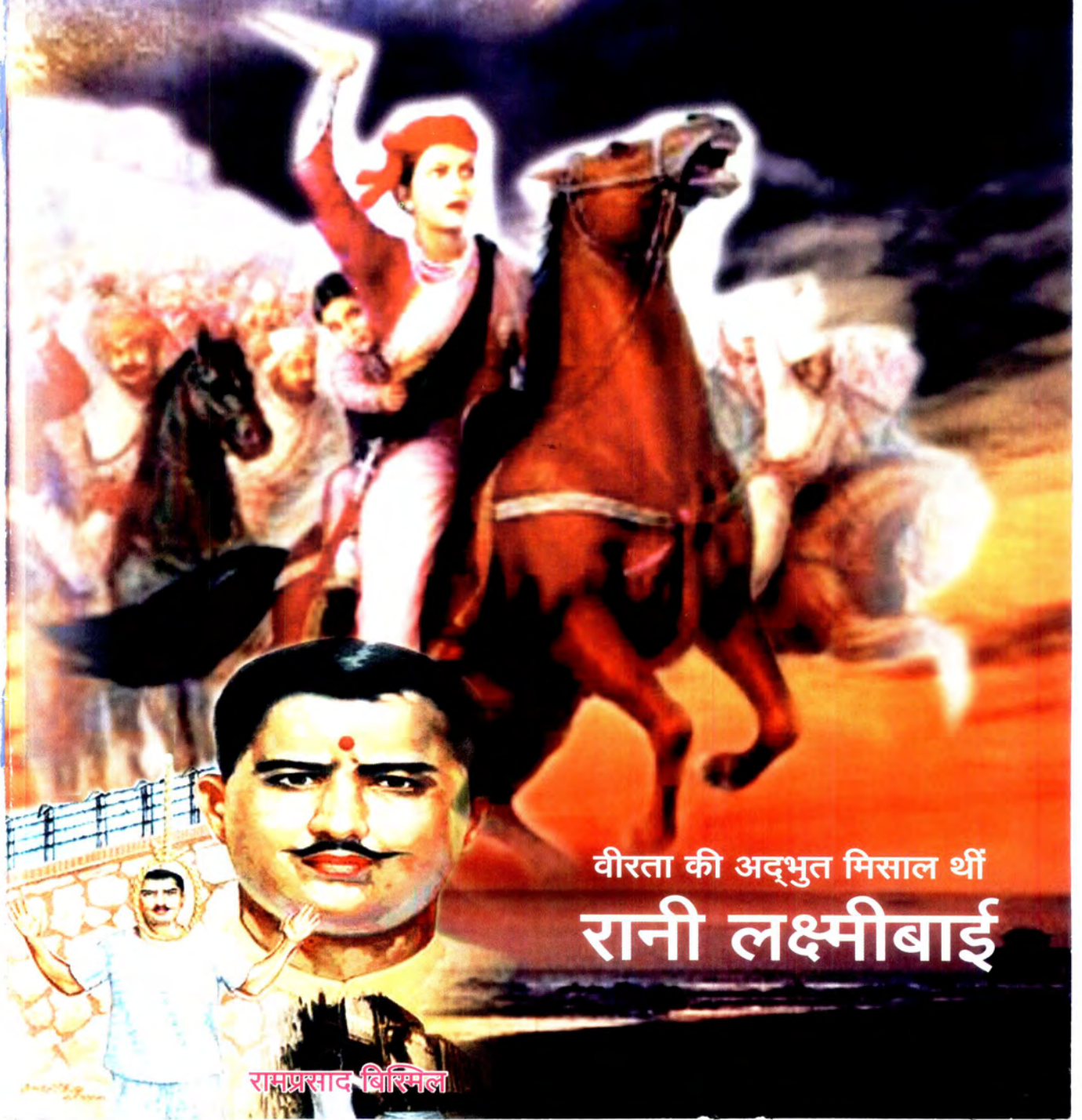
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास : ज्येष्ठ-आषाढ़, संवत् 2074
जून 2017

ओ३म्

अंक 141, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)



वीरता की अद्भुत मिसाल थीं
रानी लक्ष्मीबाई

रामप्रसाद बिस्मिल

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली एवं
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के

पद्मश्री सम्मान से सम्मानित होने पर अन्तर्मन से निस्सृत उद्गार



विगत दिनों राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्राचीन संस्कारों के साथ आधुनिक शिक्षा का विलक्षण समन्वय स्थापित करते हुए हजारों दयानन्द एंग्लोवैदिक विद्यालयों (डी.ए.वी.) द्वारा लाखों छात्र-छात्राओं के स्वर्णिम भविष्य गढ़ने वाले महान् शिक्षाविद् आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी को भारत के महामहिम राष्ट्रपति के करकमलों से

“पद्मश्री अलंकरण” सादर ससम्मान प्रदान किया गया ।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार
की ओर से अनन्त शुभकामनाएँ.



अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक,
राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७४

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,९९९

दयानन्दाब्द - १९९४

: प्रधान सम्पादक :

आचार्य अंशुदेव आर्य

प्रधान सभा

(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :

आर्य दीनानाथ वर्मा

मंत्री सभा

(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :

श्री जोगीराम आर्य

कोषाध्यक्ष सभा

(मो. ९९७७१५२११९)

★

: व्यवस्थापक :

श्री विलीप आर्य

उपमंत्री (कार्यालय) सभा

मो. ९६३०८०९२५७

★

: सम्पादक :

आचार्य कर्मवीर

मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक :

श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९९ ००९

फोन : (०७८८) ४०३०९७२

फैक्स नं. : ०७८८-४०९९३४२ ;

e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- द्विवर्षीय-८००/-

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा,
दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया ।

वर्ष - १२, अंक १२

ओ३म

मास/सन्-जून २०१७

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सावभूतनिश्चयं ।
तदग्निशंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सन्नसन्नकम्,
समाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ॥

विषय - सूची

पृष्ठ क्र.

१. जिस युद्ध में कुछ भी प्रिय नहीं होता	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२. आखिर तनाव को कैसे कहें- अलाविदा	आचार्य कर्मवीर	०५
३. "ऋषि दयानन्द और आर्यसभा ने विश्व के करोड़ों लोगों को वैदिक धर्म द्वारा सच्चे आध्यात्मिक एवं सांसारिक जीवन जीने का मार्गदर्शन दिया"	मनमोहन कुमार आर्य	०८
४. व्यक्तित्व निर्माण	आनन्द प्रकाश गुप्त	११
५. निष्काम भाव से कर्मरत रहने का नाम ही योग है.	विदेक प्रिय आर्य	१४
६. प्रभु भक्त ज्ञान व दीप्ति बांट उठा वेला में उठता है	डॉ. अशोक आर्य	१६
७. वसु बनो	श्री नरेन्द्र आहूजा	१७
८. पर्यावरण की रक्षा कैसे करें	डॉ. सुरेन्द्र कादियाण	१९
९. महारानी लक्ष्मी बाई-बलिदान दिवस	स्व. सुभद्रा कुमारी चौहान	२१
१०. पुरानी दोस्ती	श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा	२२
११. आर्यसभा और हम	डॉ. विजेन्द्र पाल सिंह	२४
१२. छ.ग. के भाषाशाह-तुलाराम परगनिहा	श्री दीनानाथ वर्मा	२६
१३. देशभक्तों के सरताज-पं. रामप्रसाद बिस्मिल	ऋषि कुमार आर्य	२९
१४. हम सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें ?	डॉ. विदेक आर्य	३१
१३. गर्मी के कारण होने वाली बीमारियाँ	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३२
१४. समाचार दर्पण		३३

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें

Website : http://www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं ह ।



जिस युद्ध में कुछ भी प्रिय नहीं होता



भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

यत्रा नरः समयन्ते कृतध्वजो, यस्मिन्नाजा भवति किंच न प्रियम् ।

यत्रा भयन्ते भुवना स्वर्दृशः, तत्रा न इन्द्रावरुणाधि वोचतम् ॥ ऋग्. ७.८२.२

ऋषिः मैत्रावरुणिः वसिष्ठः । देवता इन्द्रावरुणौ । छन्दः जगती ।

● (यत्र) जहां (नरः) योद्धा-गण (कृतध्वजः) झण्डे उठाए हुए (सम् अयन्ते) मुठभेड़ करते हैं, (यस्मिन्) जिस (आजा) युद्ध में (किंच) कुछ भी (प्रिय) प्रिय (न भवति) नहीं होता है, (यत्र) जहां (स्वर्दृशः) प्रकाश के द्रष्टा (भुवन) राष्ट्र (भी) (भयन्ते) भयभीत हो जाते हैं, (तत्र) वहाँ (इन्द्रावरुणा) हे इन्द्र और वरुण ! (नः) हमें (अधिवोचतम्) कर्तव्य-निर्देश करो ।

आज सर्वत्र युद्ध की विभीषिका व्याप्त हो रही है। हर पल आशंका बनी हुई है कि न जाने कब किन्हीं दो राष्ट्रों के मध्य युद्ध छिड़ जाए और शनैः शनैः अन्य राष्ट्रों को भी युद्ध की आग में कूदना पड़े। पर क्या युद्ध से कभी जगत् का कल्याण हुआ है? युद्ध की लपटों में घिरकर अपार जन-धन की हानि होती है, बड़े-बड़े वीरों का संहार हो जाता है, बड़े-बड़े समृद्ध राष्ट्र जलकर खाक हो जाते हैं। यह देखो, युद्ध की गगनभेदी दुन्दुभि सुनाई दे रही है। दो राष्ट्रों की सेनाएँ अपने-अपने राष्ट्र-ध्वज फहराती हुई परस्पर मुठभेड़ करने के लिए तैयार खड़ी है। इनके मनो में वैर-भाव हैं, इनकी वाणी में कर्कश सिंहनाद है, इनके हाथों में संहारक हथियार हैं। अब युद्ध आरम्भ हो गया। स्थल-सेना स्थल युद्ध का कौशल दिखा रही है, जल-सेना, युद्ध-पोत और पनडुब्बियों से रण चातुरी प्रदर्शित कर रही है, वायु सेना आकाश में गोले बरसा रही है। यह सब दृश्य देखकर बड़े-बड़े 'स्वर्दृश' राष्ट्र भी, जो चरण उत्कर्ष का प्रकाश देख चुके हैं, भयभीत हो उठे हैं कि इस युद्ध की भीषण ज्वालाएँ न जाने कहां-कहां फैलेगी और न जाने किस-किस को अपनी लपेट में लेगे। निरपराध शिशुओं, तरुणों, वृद्धों, वनिताओं के चीत्कार दिल को दहला रहे हैं। इस भीषण युद्ध में किसी का कुछ भी प्रिय होने वाला नहीं है।

हे इन्द्र और वरुण ! तुम्हीं इस संकट-काल में हमारा मार्ग-निर्देशन करो। वेद कहते हैं कि तुममें से एक वृत्रों को नष्ट करता है, दूसरा प्रजाओं के व्रतों की रक्षा करता है। हे जगदीश्वर ! इन्द्र और वरुण ये दोनों तुम्हारे ही दो रूप हैं। हे इन्द्र प्रभु ! तुम 'वृत्रों' का ध्वंस करने वाले हो। उन्हें नष्ट कर विद्यमान वे सब दुर्भावनाएँ ही वृत्र हैं, जो युद्धों को जन्म देती हैं। उन्हें नष्ट कर पारस्परिक मैत्री की सद्भावनाएँ तुम उत्पन्न करो। हे वरुण प्रभु ! तुम प्रजाओं के सत्यव्रतों की रक्षा करने वाले हो। तुम सब राष्ट्रों के मानवों के अन्दर व्रत-निष्ठा उत्पन्न करो, जिससे वे व्यक्तिगत और सामूहिक रूप में सत्य व्रतों को ग्रहण करें और उनके पालन में तत्पर होकर अपने-अपने राष्ट्र को ऊँचा उठाये तथा स्वप्न में भी युद्ध का नाम न लें। तभी युद्ध का विकट संत्रास दूर होगा, तभी विश्व में शान्ति की स्थापना होगी। भाईयो! जिस युद्ध में कुछ भी प्रिय नहीं होता उसकी कल्पना भी मन से निकाल दो, तभी तुम शान्ति से रह सकोगे और तभी विश्व में शान्ति व्याप्त हो सकेगी।

संस्कृतार्थ :- १. आजि युद्ध (निघं. २.१७) आजि आजौ। २. वृत्राण्यन्यः समिथेषु जिघ्नते, व्रतान्यन्यो अभिरक्षते सदा (ऋग्. ७.८३.९)

आखिर तनाव को कैसे कहें-अलविदा

विगत दिनों पिछला (W.H.O.) का विवरण पढ़ रहा था, जिसमें तमाम बिमारियों के कारणों का भयावह चित्र सामने आया, यह जानकर ताज्जुब लगा कि आजकल के अधिकांश रोगों का कारण अव्यवस्थित जीवन शैली प्रदूषित आहार विहार के साथ साथ अवसाद चिन्ता, टेंशन या तनाव भी एक अतिमहत्वपूर्ण कारण है। जब तक इसे दूर करने के बारे में सचेष्ट न हों तब तक इससे निजात पाना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव भी है, आईये जानने का प्रयास करें:-

आखिर यह तनाव क्या है :

प्रकृति के समान मनुष्य भी कोमल और कठोर-दोनों प्रकार की भावनाओं का स्वामी है। जब उसकी कोमल भावनाओं को ठेस लगती है, तो वह तिल-मिलाकर झुँझलाने लगता है, दाँत पीसने लगता है, उसकी मुट्टियाँ जकड़ जाती हैं, चेहरा भयानक हो जाता है, वह सिर धुनने लगता है। यह तनाव क्षणिक भी हो सकता है और काफी समय तक रहने वाला भी। क्षणिक तनाव से उतनी अधिक हानि नहीं होती, जितनी कि लम्बे समय तक रहने वाले तनाव से। कभी कभी मानसिक तनाव मनुष्य के लिए प्रेरक बनकर उसकी उन्नति के शिखर पर भी पहुँचा देता है। जब दो पहलवान कुश्ती के लिए आपस में भिड़ते हैं, तो उनमें से एक का मानसिक तनाव उसे विजयश्री का अधिकारी बनाकर उसका नाम उज्ज्वल कर देता है। इस प्रकार तनाव के विभिन्न रूप हैं। हर व्यक्ति की तनाव की भी अपनी एक सीमा होती है।

तनाव के दुष्परिणाम :

तनाव की स्थिति में मानसिक सन्तुलन बिगड़ने के कारण मन और मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। निराशा जीवन में छा जाती है। दूसरों पर भी विश्वास नहीं रहता। भूख-प्यास प्रायः समाप्त हो जाती है। शरीर में दुर्बलता अनुभव होने

लगती है। सिर दर्द, अपच, अनिद्रा तथा रक्तचाप की शिकायत हो जाती है। किसी काम में मन नहीं लगता। आलस्य बढ़ जाता है। शरीर में पित्त की मात्रा बढ़कर अनेक रोग हो जाते हैं। कभी-कभी वमन भी होने लगता है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। बात-बात में क्रोध आने लगता है। दूसरे को खाता-पीता देखकर उससे ईर्ष्या होने लगती है। स्वयं की ही नहीं, बल्कि आस-पास की भी शान्ति भंग हो जाती है। अपनी गलतियों को दूसरों के सिर मढ़ने की कुटेव पड़ जाती है। मन में एक प्रकार का अज्ञात भय सा छा जाता है। संक्षेप में, यह तनाव तन-मन व प्राणों को जर्जरित कर देता है।

तनाव दूर करने के थोथे साधन :

यह सच है कि मनुष्य परिस्थितियों का दास है। परिस्थितियों से घिर कर मनुष्य आज के मशीनी युग में स्वयं भी मशीन बनकर रह जाता है। किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि मनुष्य अपने हाथ-पैर मारकर या जूझकर परिस्थितियों को नियंत्रित न करें। कुछ लोग तनाव को दूर करने के लिए शराब, सिगरेट अथवा दूसरे नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। पर इससे तनाव कम होना तो दूर रहा, उल्टे ये पदार्थ उनके शरीर को निकम्मा तथा असमर्थ बना देते हैं। शराब पीकर तनाव को कम करने के लिए अनेक लोग अपने परिवार और स्वयं को नष्ट कर चुके हैं। फेफड़े गलाकर जीवन के सच्चे सुख से हाथ धो बैठे हैं, कैंसर को निमन्त्रण देकर चारपाई पर सड़ते रहे हैं, कभी दिल की धड़कन बढ़ने पर रक्तचाप ने उन पर प्रहार किया है। इसके बदले उनकी पसीने की कमाई हाथ से जाती रही, जिन्दगी लंगड़ी बनकर रह गई है, होश-हवास चले गए हैं, मान-सम्मान चला गया है। लेकिन यह शराब फिर भी तनाव से छुटकारा न दिला सकी।

सिगरेट पीकर तनाव दूर करने की बात भी कुछ कम अटपटी नहीं है। एक सज्जन पत्नी के मायके जाने पर पहली बार इतने भावुक हो गये कि वियोग में अभिभूत हो तनाव के चंगुल में फंस गए। जिस सिगरेट को पहले कभी उन्होंने छुआ भी नहीं था, अब लगातार उसी सिगरेट के दो पैकेट फूंक डाले। रात होते होते उन्हें उल्टियों का ऐसा तांता लगा, जो बड़ी कठिनाई से थम सका। जिसके पीने से उनका तनाव कम होने की अपेक्षा बढ़ गया। इस विषय में पश्चिमी जर्मनी के जुलियस मैक्सीमिलन विश्वविद्यालय में न्यूरोटोलोजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. क्लोस् क्लासेन ने बतलाया है कि जब कोई व्यक्ति धुएँ का कश अन्दर खींचता है, तब उसे अपने भीतर एक तनाव महसूस होता है और उसी समय धुआँ उसके मस्तिष्क के कोशों को हानि पहुंचाता है। यह कश या धुआँ उसके रक्त के रासायनिक घटकों को प्रभावित करता है। भांग, अफीम, चरस या सुल्फा भी तनाव को दूर करने के ऐसे ही तथाकथित खतरनाक उपाय हैं।

तनाव से मुक्ति के उपाय :

तनाव को दूर करने के लिए सबसे पहली और आवश्यक बात अपने अन्दर आत्म-विश्वास

जगाना है। आत्मविश्वास जाग्रत होने पर जरा-जरा सी बात पर कभी तनाव नहीं होगा और यदि कभी होगा भी तो वह क्षणिक होगा।

निश्चिन्त होकर पूरी नींद लेनी चाहिए। नींद पूरी होने पर शरीर के टूटे-फूटे घटक (सैल्ज) अपनी पहली दशा में आ जाते हैं और शरीर स्वस्थ रहता है। शरीर के स्वस्थ रहने से मन स्वस्थ रहता है। तन-मन के स्वस्थ रहने से तनाव के लिए कोई स्थान नहीं रहता। जीवन की एकरसता को दूर करके जीवन में विविधता को अपनाना चाहिए। स्त्रियाँ घर-गृहस्थी के एकरसीय काम के अलावा अपने मन को तनाव से बचाने के लिए चित्रकारी, पढ़ाई-लिखाई, सिलाई-कढ़ाई अथवा मनोरंजन आदि में लगा सकती हैं। इसके अतिरिक्त भ्रमण करके बच्चों के साथ खेलकर अथवा अपनी हॉबी को विकसित करके जीवन की एकरसता को दूर कर सकते हैं। अपने खान-पान पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। खाने में अम्लयुक्त पदार्थ न लें। चिकित्सकों ने मानसिक तनाव से बचने के लिए कैल्शियम तथा प्रोटीन आवश्यक तत्व बतलाए हैं। अतः खाने में हरी साग-सब्जियाँ, दालें, दूध-दही आदि पौष्टिक, सात्विक, सन्तुलित और शुद्ध पदार्थ ही लेने चाहिए।

आचार-विचार तथा व्यवहार को भी संबल रखना चाहिए। धैर्य, सहन-शीलता, सौहार्द और शुद्ध चरित्र को अपनाकर भी तनाव से सरलता से बचा जा सकता है। उत्तेजक कैबरे, नाच, रंग और तमाशों से भी बचना चाहिए, क्योंकि इस प्रकार के उत्तेजक दृश्य शरीर में ५० प्रतिशत पित्त की वृद्धि करते हैं, जिससे रक्त दूषित हो जाता है। यदि कोई मानसिक श्रम करता है, जैसे - डाक्टरी, वकालत तथा अध्यापन का कार्य आदि, तो ऐसे व्यक्तियों को शारीरिक श्रम भी करना चाहिए। चाहे वह कार्य भ्रमण का हो या अपने घर की फूलवारी की देखभाल का हो। इसी प्रकार शारीरिक श्रम करने वालों को मानसिक परिश्रम की ओर ध्यान देना चाहिए। इससे तनाव तो दूर होगा ही, साथ ही कुछ न कुछ ज्ञान की प्राप्ति भी होगी। क्रोध से बचना चाहिए। यह जीवन का भयंकर शत्रु है। यह बुद्धि कुंठित करता है। इनसे छुटकारा प्राप्त करने पर तनाव पास नहीं फटकने पायेगा। अन्त में यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि तनाव को स्वयं पर कभी भी हावी नहीं होने देना चाहिए, क्योंकि तनाव से जीवन खोखला हो जाता है।

एक महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी भी बात के बारे में अनावश्यक चिन्ता नहीं करनी चाहिए। दर दशा में हर परिस्थिति में खुशी ढूँढने की कोशिश करनी चाहिए। किसी विचारक ने इस संबंध में बड़ी सुन्दर बात कही थी कि खुशी एक चिड़िया है वह हरदम उड़ती रहती है यदि आपको खुशी चाहिए तो उसे अपनी मुट्ठी में रख लीजिए क्योंकि यह ज्यादा देर न ठहरेगी फिर उड़ जाएगी यही मूल मंत्र है तनाव को भगाने का। फिर देखिये खुशियाँ ही खुशियाँ।

- आचार्य कर्मवीर



मनुष्य सभी प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ प्राणी व योनि है। मनुष्य के पास जो मन है वह अन्य प्राणियों की तुलना में विशिष्ट गुणों व शक्तियों से सम्पन्न है। मनुष्य अपने मन से मनन, विचार व चिन्तन कर सकता है जबकि अन्य पशु पक्षी आदि

प्राणी ऐसा नहीं कर सकते। मनुष्य किसी विषय में चिन्तन कर सत्य व असत्य का निर्णय कर सकता है। बच्चा विद्यालय में पढ़ता है। उसको गणित के प्रश्न समझाये जाते हैं। उसको अंकों का योग करना व घटाना भी सिखाया जाता है। अब उसको संख्याओं के योग व घटाने के वह प्रश्न पूछे जाते हैं जो पहले उसे बताये नहीं गये थे। उसे अपनी बुद्धि व मन के सहारे पूछे गये प्रश्नों पर विचार, चिन्तन व मनन के द्वारा प्रश्न के सत्य उत्तर का निर्णय करना होता है और वह धीरे धीरे इस विद्या में निपुण होता जाता है। एक दिन वह बालक गणित का उच्च कोटि का शिक्षक तक बन जाता है। पशुओं को मनुष्यों की भांति भाषा, गणित, विज्ञान व अन्य विषयों को सिखाया नहीं जा सकता और न ही वेद मन्त्रों, गीत व भजनों को रटाया जा सकता है। यहां तक की मनुष्येतर प्राणी तो हमारी तरह भाषा भी नहीं बोल सकते और न ही अपने दुःखों की अभिव्यक्ति ही कर पाते हैं। ऐसे अनेक उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि मनुष्य एक मननशील, सत्यासत्य का विवेचन करने वाला तथा सत्य-असत्य का निर्णय करने वाला श्रेष्ठ प्राणी है।

आज का संसार शिक्षा के महत्व को जानता है। अशिक्षित मनुष्य का जीवन पशुओं से कुछ बेहतर वा कुछ

कुछ उनके समान ही होता है। शिक्षा प्राप्त व्यक्ति अपनी मातृ भाषा व कुछ अन्य भाषाओं को बोलने व समझने का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। बहुत से लोगों को अनेक भाषाओं का ज्ञान होता है। ऋषि दयानन्द जन्म से गुजराती थे। स्वाभाविक रूप से गुजराती उनकी मातृभाषा थी जिसका वह बोलचाल आदि में सरलता से प्रयोग करते रहे होंगे। उन्होंने अपने ग्राम व निकटवर्ती स्थानों पर संस्कृत व यजुर्वेद आदि का अध्ययन भी किया था। वैराग्य होने पर वह ईश्वर व ईश्वरेतर ज्ञान की खोज में घर से चले गये। उन्होंने देशाटन किया और योग तथा आध्यात्मिक सच्चे गुरुओं की खोज कर जिनसे जो ज्ञान प्राप्त हुआ, उसे ग्रहण किया। संस्कृत पर उनका असाधारण अधिकार हो गया। वह धारा प्रवाह संस्कृत बोल सकते थे व अपने उपदेश व वार्तालाप संस्कृत में ही करते थे। बंगाल के कलकत्ता स्थान पर जाने पर उन्हें केशवचन्द्र सेन जी ने अपने उपदेशों व लेखन आदि में हिन्दी को अपनाने की प्रेरणा दी। इस उपयोगी प्रस्ताव को उन्होंने स्वीकार किया और कुछ ही काल पश्चात वह हिन्दी भाषा के अच्छे जानकार, वक्ता व लेखक बन गये। उनकी प्रायः सभी कृतियां हिन्दी या संस्कृत-हिन्दी भाषाओं में हैं। सिद्ध योगियों से योगाभ्यास सीख कर वह योग के सफल अभ्यासी बने थे। सन् १८६०-१८६३ के बीच उन्होंने मथुरा में गुरु विरजानन्द सरस्वती से आर्य व्याकरण अष्टाध्यायी महाभाष्य व निरुक्त पद्धति का अध्ययन किया। अब संस्कृत भाषा में उनकी प्रतिभा व सामर्थ्य आशातीत वृद्धि को प्राप्त हुए। गुरु विरजानन्द जी ने विद्याध्ययन पूर्ण होने पर स्वामी दयानन्द जी को देश व समाज से अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीति, सामाजिक असामनता, फलित ज्योतिष आदि मिथ्या विश्वासों को दूर करने की प्रेरणा की। स्वामी दयानन्द जी ने गुरु जी प्रेरणा वा आज्ञा को स्वीकार किया और देश में सत्य वैदिक धर्म का प्रचार आरम्भ कर दिया।

स्वामी दयानन्द ने सबको स्त्री, पुरुष, अन्त्यज, दलित सहित सभी मतों के लोगों को विद्याध्ययन व वेदाध्ययन का अधिकार दिया। उन्होंने प्राचीन काल में प्रचलित गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का उद्धार भी किया। उनके समय में समाज में मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष व भाग्यवाद का प्रचार, बाल विवाह, विधवाओं के विवाह पर प्रतिबन्ध, नारियों के वेदाधिकार का निषेध, दलितों के भी शिक्षा व वेदाधिकार पर

प्रतिबन्ध, छुआछूत, जन्मना जातिवाद, पक्षपात व मानव अधिकारों का हनन, विधर्मियों द्वारा धर्म परिवर्तन, बच्चों व बड़ों को संस्कारित करने की व्यवस्था का अभाव, ब्रह्मचर्य के महत्व से अनभिज्ञता, बहुपत्नी प्रथा, सती प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि कुप्रथायें प्रचलित थीं। ऋषि दयानन्द ने इन्हें ईश्वरीय ज्ञान वेद के विरुद्ध बताया और तर्क व युक्ति से इनकी निस्सारता बताते हुए इन सभी का खण्डन किया।

समाज में कुछ लोग बुद्धिशील होते ही हैं। लोगों पर उनके खण्डन व वैदिक मान्यताओं के प्रचार का प्रभाव हुआ। संसार में एक सच्चिदानन्द गुण, कर्म व स्वभाव युक्त ईश्वर के अस्तित्व, असंख्य अल्पज्ञ एकदेशी चेतन जीवात्माओं का अस्तित्व तथा सूक्ष्म जड़ त्रिगुणात्मक प्रकृति के अस्तित्व सहित शाकाहार, दुग्धाहार, फलाहार, अन्नाहार, शुद्ध जल का पान, योग की ध्यान विधि व वेदमन्त्रों से ईश्वर के ध्यान व उपासना का प्रचार, अग्निहोत्र, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ व बलिवैश्वदेव यज्ञ का उन्होंने प्रचार किया। विश्व में सत्यार्थ प्रकाश नामक सत्य अर्थों से परिचित कराने वाले धर्म ग्रन्थ की रचना व प्रचार सहित उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदभाष्य, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि अनेकानेक ग्रन्थों की रचना व प्रचार किया। मनुष्यों की सभी शंकाओं का वैदिक मान्यताओं के

“जिस प्रकार एक सत्य विचारधारा वाले परिवार की उन्नति होती है, परस्पर भिन्न-भिन्न विचार रखने वाले पारिवारिक सदस्य में एकता का अभाव होता है, वह परस्पर लड़ते झगड़ते रहते हैं, उनकी आध्यात्मिक उन्नति तो दूर भौतिक उन्नति भी बहुत कम व न के बराबर होती है। इसी प्रकार जिस देश में सभी लोग सत्य व ज्ञानपूर्ण विचारों वाले एक मत होकर मित्रता व सौहार्द के वातावरण में कार्य करते हैं वहीं उन्नति व सुख होता है।”

आधार पर समाधान भी उन्होंने किया। पौराणिकों व विधर्मियों से शास्त्रार्थ व वार्तालाप आदि किये और वैदिक मान्यताओं को मानव जीवन के लिए कल्याणकारी व हितकारी भी सिद्ध किया।

देश की आजादी का मूल मन्त्र भी स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश, आर्याभिविनय, संस्कृतवाक्यप्रबोध व अपने द्वारा देशवासियों को दिया। गोरक्षा व हिन्दी-संस्कृत को अपूर्व महत्व दिया व इन्हें राष्ट्रीय उन्नति में परम सहायक

बताया। ऐसे अनेकानेक कार्य स्वामी दयानन्द जी ने देश, समाज व लोगों के जीवन के कल्याण के लिए किए। यह भी बता दें कि स्वामी जी का उद्देश्य केवल भारत और यहां के आर्य हिन्दू निवासियों के कल्याण तक सीमित नहीं था अपितु वह आर्य हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, जैन व सिख आदि सभी मनुष्यों का कल्याण व परम हित करना चाहते थे। उन्होंने सभी को वैदिक विचारधारा को अपनाने का आह्वान किया। बहुत से लोगों ने अपने पूर्व मत का त्याग कर वैदिक धर्म व आर्यसमाज संगठन को अपनाया और अपनी आत्मोन्नति सहित सामाजिक व बौद्धिक उन्नति की। उनके ही प्रयासों से हिन्दुओं का धर्मान्तरण रुका और देश में आजादी का आन्दोलन चला।

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार अर्जुन सिंह, सरदार किशन सिंह, सरदार अजीत सिंह, शहीद भगतसिंह, महादेव गोविन्द रानाडे, ज्योतिबा फुले जी आदि या तो उनके साक्षात् शिष्य थे या उनके विचारों व सिद्धान्तों से प्रभावित थे। ऋषि दयानन्द ने सच्चे आध्यात्मिक एवं सांसारिक जीवन को जानने व समझने के लिए ही अपने माता-पिता का सुख-सुविधाओं से भरा पूरा परिवार छोड़ा था और दर-दर की खाक छानी थी। वह

सफल हुए और घोर तप से उन्हें जो अमृत प्राप्त हुआ, उस संजीवनी से उन्होंने निष्पक्ष भाव से देश व विश्व के लोगों के कल्याण के लिए विश्व के एकमात्र पूर्णतः सत्य मनुष्य धर्म वैदिक धर्म का प्रचार किया जिसे उनके समय व बाद में आर्यसमाज निरन्तर करता चला आ रहा है। जीवन के सभी प्रकार की समस्याओं व शंकाओं का समाधान वेदों से ही सिद्ध होता है। संसार के सभी मत एकांगी हैं तो वैदिक मत व धर्म सर्वांगीण गुण, धर्म वाला धर्म है। वैदिक धर्म से ही ईश्वर व जीवात्मा के ज्ञान, परस्पर व्यापक-व्याप्य संबंध, ईश्वरोपासना आदि के ज्ञान सहित संसार में अभ्युदय एवं निःश्रेयस का मार्ग प्रशस्त होता है।

ऋषि दयानन्द जी का जीवन प्राचीन ऋषियों, राम, कृष्ण, चाणक्य जैसा महिमाशाली था। उन्होंने ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए सत्य वैदिक सिद्धान्तों, मान्यताओं व धर्म का प्रचार किया। संसार के प्रत्येक मनुष्य का यही कर्तव्य है कि वह असत्य का त्याग और सत्य के ग्रहण को करने कराने में अपना जीवन लगाये। ऐसे लोगों के लिए ऋषि दयानन्द जी का जीवन ही आदर्श है। ईश्वर की सच्ची स्तुति, प्रार्थना व उपासना का मार्ग ऋषि दयानन्द ने ही संसार को बताया।

अग्निहोत्र का स्वरूप, इसका महत्व व उसके उपयोगी पक्षों से भी ऋषि ने ही देश व संसार को अवगत कराया। पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ तथा बलिवैश्वदेव यज्ञ सहित सभी देशोपकारक एवं समाज हितकारी कार्यों का ज्ञान व प्रेरणा ऋषि दयानन्द के जीवन व कार्यों से हमें मिलती है। ऋषि दयानन्द जी का व्यक्तित्व सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है। सभी विश्व के लोगों को उनके जीवन चरित सहित उनके सभी ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए और इन सबसे प्रेरणाग्रहण कर वेद और सत्यार्थ प्रकाश आदि की शिक्षाओं के अनुसार आचरण करना चाहिए। उनकी बतायी वैदिक विचारधारा को अपनाने पर ही संसार का कल्याण हो सकता है। मत-मतान्तरों की उपस्थिति नये नये विवादों को जन्म देती है। इससे विश्व में पूर्ण शान्ति एवं कल्याण की अपेक्षा नहीं की जा सकती। यह महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदत्त विचारों के मंथन का निष्कर्ष है। जिस प्रकार एक सत्य विचारधारा वाले परिवार की उन्नति होती है, परस्पर भिन्न-भिन्न विचार रखने

वाले पारिवारिक सदस्य में एकता का अभाव होता है, वह परस्पर लड़ते झगड़ते रहते हैं, उनकी आध्यात्मिक उन्नति तो दूर भौतिक उन्नति भी बहुत कम व न के बराबर होती है। इसी प्रकार जिस देश में सभी लोग सत्य व ज्ञानपूर्ण विचारों वाले एक मत होकर मित्रता व सौहार्द के वातावरण में कार्य करते हैं वहीं उन्नति व सुख होता है।

तुलसीदास जी ने कहा है जहां सुमति वहां सम्पति नाना जहां कुमति वहां विपत्ति निधाना। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन काल में वेदों के प्रचार सहित जो जो कार्य किये, उन्होंने व उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने देश व विश्व के करोड़ों लोगों के जीवनो को बदल दिया और वह सब आध्यात्मिक व सांसारिक उन्नति की दृष्टि से सन्तुष्ट व अग्रणीय है। जो भी व्यक्ति अपनी सार्वत्रिक उन्नति करना चाहे उनके पास यही विकल्प है कि वह आर्यसमाज के नियमों, सिद्धान्तों व मान्यताओं को जाने और उनका पालन करें। वेदों की शिक्षाओं व नियमों का पालन ही सत्य व धर्म का सच्चा मार्ग है। आइये, आर्यसमाज के साथ मिलकर सन्मार्ग के मार्ग पर चलने का संकल्प लें और जन्म-मरण के पाश से मुक्त होकर जीवन लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करें।

पता: १९६, चुखूवाला-२, देहरादून-२४८००१

प्रवेश सूचना

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) हरियाणा (मान्यता गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार) में सत्र २०१७-१८ में (कक्षा ५वीं से ९वीं तक) प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। नियमावली एवं अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें। ९४६६३३५६८२, ९४६६६१३४१३

: आवश्यकता है :

१२वीं कक्षा तक संस्कृत साहित्य, व्याकरण एवं दर्शनादि पढ़ाने में सक्षम, संस्कृत संभाषण एवं वैदिक सिद्धान्त में रुचि रखने वाले एक संस्कृत अध्यापक की आवश्यकता है।

न्यूनतम योग्यता : शास्त्री, बी.एड./शिक्षा शास्त्री

ई-मेल : gurukularyanagar@gmail.com

वेबसाइट : www.gurukularyanagarhisar.com

“असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।”

(“हे प्रभु ! मुझे असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।”)

यदि हमारे मन में यह प्रश्न उठता है कि व्यक्तित्व का निर्माण क्यों ? तो फिर यह प्रश्न अवश्य उठना चाहिये कि यह मनुष्य जीवन ही क्यों ? क्या इस जीवन का भी कोई यथेष्ट उद्देश्य हो सकता है, क्योंकि जब हम यह अनुभव करते हैं कि इस संसार में कोई भी वस्तु बेकार नहीं बनी है, प्रत्येक वस्तु सकारण है। प्रत्येक चर-अचर प्राणी एक दूसरे के सहजीवी हैं। सभी पदार्थ एक वलय चक्र के रूप में विद्यमान हैं तथा प्रत्येक जीव जाली का एक निश्चित जीवन चक्र है। सभी जीवों में धारित गुण भी लगभग समान हैं। इसी प्रकार प्राणियों के मनोभाव तथा उनके क्रमिक विकास में भी बहुत कुछ समानताएं पाई जाती हैं। हां ! विभिन्न प्राणियों में हम पाते हैं कि किसी में गुणों की क्रियाशीलता कुछ कम है तो किसी में कुछ अधिक। इसी प्रकार हम पाते हैं कि जीवधारियों में प्रत्येक इन्द्रिय का जो भी विषय-गुण है, वह अवश्य ही इस परिवेश में कहीं विद्यमान है और इसी प्रकार जहाँ भी किसी तत्व की विद्यमानता है, वैसे ही गुणधर्म वाले जीव और पदार्थ वहाँ विद्यमान हैं। इसी प्रकार हम पाते हैं कि प्रत्येक संसार का कोई भी ऐसा पदार्थ, वस्तु या पेड़-पौधे अथवा प्राणी नहीं है, जिसके गुण-धर्म का प्रकृति में कोई सदुपयोग न हो। संसार में कुछ भी गुणहीन और सारहीन नहीं है। इस प्रकार हम पाते हैं कि इस मनुष्य जीवन के होने का कोई न कोई कारण अवश्य है और इसी कारण की खोज के लिए हमें इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है, इस जीवन के उद्देश्य को जानने की आवश्यकता है और इस जीवन उद्देश्य को जानने के लिए आवश्यक है यथेष्ट दिशासूचक एक सार्थक पहल की। यह सार्थक पहल हमें यदि कहीं मिल सकती है तो वह हमारी मानसिक उत्क्रांति से ही संभव है। हमारी मानसिक चैतन्यता, इसकी सक्रियता ही हमें हमारे जीवनोद्देश्य को खोजने में मदद कर सकती है और यह चैतन्यता हमें प्राप्त हो सकती है मात्र तपोशील, स्वाध्यायी एवं आस्थापूर्ण, श्रद्धावान जीवन शैली से। हमारे

सद्गुणी आचार हमारे सकारात्मक विचार और यथेष्ट आत्मशक्तिपूर्ण संकल्पित चरित्र से। इसलिए हमें अपने व्यक्तित्व निर्माण की ओर एकनिष्ट होकर लगनपूर्वक प्रयास करने की आवश्यकता है।

हमारा व्यक्तित्व ही मानव सभ्यता का दूसरा नाम है। हमारे पास यदि यथेष्ट चरित्र नहीं हो तो हमारी शक्तियों की अपेक्षा दुर्बलताएँ ही अधिक प्रभावी होंगी और हमारे सौभाग्य की तुलना में दुर्भाग्य ही अधिक बलशाली होगा। यह हमारा चरित्र ही है जो हमारे समाज के निर्माण का पूर्णतः जिम्मेदार है। हमारा चरित्र ही है जो हमें सामाजिक शान्ति-सामंजस्य, सुख-संयम, सच्चाई, व ईमानदारी का अवदान देता है। आज के समय में जब हमारा समाज और हमारी युवापीढ़ी इस ओर बिलकुल भी ध्यान नहीं दे रही है, हमें इस पर चिंतन करने और अपने रोजमर्रा के जीवन में उतारने की महती आवश्यकता है ताकि हमारी आगे आने वाली पीढ़ियाँ नैतिक मूल्यों के महत्व को समझें और वे चारित्रिक विकृति तथा वितण्डावाद के गहरे संकट में न फँसे। विचार करें यदि हमें आपस में विश्वसनीयता, प्रेम, परोपकारिता, न्यायपरायणता, जैसे सद्गुण शून्य हो जायेंगे तो हमारे समाज में सभी ओर लड़ाई-झगड़े, उत्तेजना-उपद्रव, भ्रष्टाचार-अनैतिकता का ही बोलबाला होगा।

महान चिंतक और विचारक कन्फ्यूशियस का कथन है “अपने स्वयं के चरित्र का निर्माण तथा साथ ही दूसरों को भी वैसा ही करने में सहायता करना, स्वयं सफलता प्राप्त करने का प्रयास और दूसरों की भी सफलता में सहायक होना, सभी की एक साथ उन्नति अर्थात् सर्वोदय का सिद्धान्त है।”

समाज में सभी की उन्नति आवश्यक है। यदि कोई भी व्यक्ति पीछे छूट जाता है और उसका चरित्र गिरता है या वह सही मार्ग से भटकता है तो इसकी जिम्मेदारी प्रत्येक चिंतनशील और बुद्धि संपन्न व्यक्ति की ही है क्योंकि जो बुद्धिशील और समाज के अधिष्ठाता हैं

वही समाज को सही दिशा देने में सक्षम होते हैं। विभिन्न व्यक्तियों, समाजों एवं राष्ट्रों की आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न हैं। सबकी सफलता और उन्नति के अपने-अपने साधन और अपने-अपने मार्ग हैं। जो कहीं पर समान हैं और कहीं पर भिन्न हैं। आज हम देखते हैं कि स्वार्थपरता के कारण यह किसी न किसी रूप में एक दूसरे की उन्नति के प्रतिकूल सिद्ध हो रहे हैं। आज आवश्यकता है सार्वभौमिक भलाई वाली सोच की और यह मात्र हमारे यथेष्ट चरित्र तथा श्रेष्ठ व्यक्तित्व से ही प्राप्त हो सकती है। एक मानवतावादी सोच ही सही मनुष्य का निर्माण कर सकती है और मात्र सही मनुष्य ही समस्त समस्याओं के निवारण में सहायक हो सकता है। कन्फ्यूशियस आगे भी कहते हैं कि "जिसमें मनुष्यत्व नहीं वह न तो अधिक काल तक निर्धनता को सहन कर सकता है और न ही सम्पन्नता को पचा सकता है।" यह बात वर्तमान काल में कितनी सच साबित हो रही है, क्योंकि निर्धनता मनुष्य को दीन-हीन पशु में परिवर्तित कर रही है और धन की बाढ़ मनुष्य को बर्बर, दिशाहीन, अनुददेश्यपूर्ण काल के गाल में ढकेल रही है।

यह सच है कि हमने प्रगति तो की है। हमारी कुशलता, बुद्धिचातुर्य, तथा स्वार्थपरता अवश्य ही आज पहले से अधिक विकसित है। परन्तु स्वार्थपरता इतनी अधिक है कि वह कुशलता और बुद्धिचातुर्य पर भारी पड़ रही है और हमारे समाज के अग्रिम पंक्ति में पदस्थ शासक, प्रशासक, न्यायाधीश, वकील, व्यवसायी, चिकित्सक, तकनीकी तंत्र से जुड़े व्यक्ति आज भ्रष्टतम स्थिति पर हैं। हमने आवागमन तथा संचार तकनीक में अभूतपूर्व प्रगति तो की है, हमने भौतिक दूरियों को कम तो किया है पर यह भी सच है कि हमारे मन की दूरियाँ बढ़ी हैं। हम समाज को यदि सभ्यता के पैमाने पर आँकें तो आज हम अधिक असभ्य हुए हैं। आज मनुष्य-मनुष्य में भेद अधिक हो गया है। आज मनुष्य, मनुष्य का शोषण ही नहीं कर रहा वरन वह अपने समस्त परिवेश और पर्यावरण का शोषण करने पर अमादा है। मतभेद अधिक हुए हैं, समरसता और समझदारी कम हुई है। राग-द्वेष, ईर्ष्या के भाव अधिक हुए हैं तथा मानव मन की कलुषता में वृद्धि हुई है। मनुष्य ने मानवतावादी धर्म के लक्षणों को खो दिया है।

हम देखते हैं कि आज समाज में चरित्र की जो गिरावट आई है वही जल, थल और वायु में प्रदूषण के रूप में सभी ओर दिखाई दे रही है। प्रकृति ने तो सभी के लिए पर्याप्त स्थान और संसाधन उपलब्ध कराये हैं पर

मनुष्य ही है जिसने इस संसाधनों को एक दूसरे से वंचित करके उसे निर्धन बना रखा है। इसी प्रकार हम प्रकृति को निहारे तो आज वह जिस प्रकार धूल-धूसरित है, उसमें जो विद्रूपता और विषमता दिखाई देती है वह मनुष्य के चरित्र-व्यवहार की स्वयं की उपज है। जबकि प्रकृति ने अपनी गोद में सब कुछ इतनी प्रचुरता से दिया है कि मानव को कुछ भी कमी नहीं है परन्तु हम देखते हैं कि आज न तो हमें शुद्ध वायु मिल रही है और न ही शुद्ध पानी। यहाँ तक कि रासायनिक पदार्थों के प्रदूषण से हमारी धरती की उर्वरता भी समाप्त प्रायः होती जा रही है। आज मनुष्य नये-नये ऐसे कठिन रोगों से ग्रसित होता जा रहा है कि आज उसकी बहुत ही दयनीय स्थिति होती जा रही है। प्रकृति तो हमें सभी कुछ शुद्ध रूप में उपलब्ध कराती है पर यह मनुष्य का चरित्र ही है जो उसे अपने स्वयं के लिए, अपने बच्चों तथा अन्य लोगों को खिलाने के लिए भोजन पदार्थों में मिलावट का जहर घोलता है। आज संसार जिन गंभीर स्थिति से ग्रसित है वह मानवता के लिए बहुत ही चिंताजनक है। आज हमारी पृथ्वी विध्वंसक मिसाइलों, परमाणु बमों तथा रासायनिक हथियारों के गम्भीर परिणामों की आशंका से घिरी हुई है, जिन्हें मानव ने स्वयं निर्मित किया है। धन और धर्म के नाम पर विश्व स्तर पर आपसी मारकाट मची हुई है। यह आपसी द्वेष, मनुष्य की अपनी निम्न सोच का ही परिणाम है। कमी भी कोई खनिज और रासायन आपस में मिलकर स्वयं से विध्वंसक पदार्थ या बम की रचना नहीं करते यह मनुष्य का चरित्र ही है जो उसे अधोगति की ओर ले जाने पर अमादा है।

आज आवश्यक है एक महानायक की जो समाज को विश्वस्तर पर सही दिशा दे। जिससे हमारा व्यक्तित्व उत्तम हो और उसमें निखार आये। आज आवश्यकता है एक ऐसे महामानव कि जो अपने विचारों से संसार को अच्छी राह दिखाये और उसका मार्ग शान्ति की ओर प्रशस्त करे, जहाँ अपराधिक कार्यों की अपेक्षा सेवामाव वाले कार्यों की प्रचुरता हो, असुरक्षा की अपेक्षा सुरक्षा का भाव अधिक हो, हमारे घर-हमारी बस्तियाँ, हमारी पृथ्वी गंदगी और प्रदूषण का अंबार बनने की अपेक्षा स्वच्छ, सुंदर और प्रदूषण मुक्त हो। हमारे शिक्षा संस्थान, न्यायालय, चिकित्सालय, व्यवसायिक प्रतिष्ठान न होकर उच्च चरित्र वाले, प्रकृति के सहजीवी भाव को प्रसारित करने वाले तथा निष्ठावान चरित्र के अनुगामी हों। यदि हमारा चरित्र अच्छा होगा, हमारे शिक्षार्थी चरित्रवान होंगे। हमारे समाज

मे शत्रुता की अपेक्षा एक दूसरे को ऊँचा उठाने एवं असहायों की सहायकता करने का पवित्र भाव ही फले फूलेगा। हमारे चिकित्सालय सेवाधर्म वाले होंगे और हमारे धर्मसंस्थान व्यवसायिकता के केन्द्र न होकर सही मायने में धर्म के लक्षणों को समाज को देने वाले होंगे। धर्माचार्य और मठाधीश मात्र पौराणिक चरित्रों के किस्से-कहानी कहने वाले न होकर मनुष्य को मानवता का सही पाठ पढ़ाने वाले तथा सदाचरण को व्यवहार में लाने वाले होंगे। आज युवापीढ़ी मात्र कालयापन कर अपना जीवन नष्ट कर रही है। उसके पास न तो यथेष्ट विचार हैं और न ही जीवन का कोई उद्देश्य। हम देखते हैं कि वर्तमान पीढ़ी असीम गति से दिशाहीन दौड़ रही है और स्वयं ही अपनी हंता बन रही है। वह स्व-अनुशासन भूलकर असंयमित जीवन जीने को बाध्य है। उसकी ऊर्जा, सुख-शांति तथा लावण्यता खोती जा रही है। उसका जीवन दयनीयता और चारित्रिक दरिद्रता की ओर बढ़ रहा है। वह पूर्णतः दिशाहीन है। इस प्रकार हम पाते हैं कि आज की पीढ़ी को दिशानिर्देश की परम् आवश्यकता है।

व्यक्तित्व निर्माण ही समाज को सही विचार और संस्कार दे सकता है। जिससे समाज में सुधारात्मक कार्यों में प्रगति हो। समाज सदैव जागृत रहे और वह सदैव सामाजिक हित के कार्य साहस और उत्साह के साथ संपन्न करे। हमारे विचार ही हमारे व्यक्तित्व निर्माण की प्रथम कड़ी हैं, जिससे हमारी जीवन शैली, वैवाहिक-संबंध, पारिवारिक स्नेह तथा एकदूसरे के प्रति कलुषविहीन भावनाओं का उत्कृष्ट विकास हो सकता है। सही विचार का अभाव समाज तथा लोकतंत्र के लिए बेहद खतरनाक है, आज हम देखते हैं कि समाज जटिल समस्याओं से घिरा हुआ है। पारिवारिक प्रेम की कड़ियाँ टूट रही हैं। इसप्रकार तो मानव-मानव में भेद बढ़ता ही जायेगा। मन का विश्वास खो जायेगा, आनंद और खुशी का अभाव होगा, साथ ही नेत्रों तथा चेहरे का तेज खो जायेगा। हम विचार रहित हो अपनी आत्मशक्ति और विश्वास भी खो बैठेंगे। समाज की प्रफुल्लता समाप्त हो जायेगी।

आवश्यकता है एक वैचारिक और सुधारात्मक, सामाजिक निर्माण के आंदोलन की और वह मात्र संभव है सामाजिक चरित्र के उत्थान से। हमारा चरित्र ही हमारा व्यक्तित्व है। हम जो दिखाई देते हैं वही हम हैं, विद्वानों ने कहा है कि "किसी व्यक्ति का पूरा स्वभाव तथा चरित्र ही उसका व्यक्तित्व कहलाता है।" आप जिस

प्रकार के व्यक्ति हैं, वही आपका व्यक्तित्व है और वह आपके आचरण संवेदनशीलता तथा विचारों से व्यक्त होता है। प्रश्न यह है कि सदाचरण तथा संवेदनशीलता समाज में कैसे प्रसारित हों, क्योंकि यही हैं जिनसे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। यह मनुष्य का चरित्र ही है जिससे वह अपने इतिहास का निर्माण करता है। वह इस संसार में अपने अस्तित्व की शैली को अंकित कर जाता है। यही मात्र उसकी नेकनामी तथा अमरता का एक माध्यम है। यह उसकी प्रत्येक उपलब्धि से ऊपर है। "मनुष्य वही बनता है जो वह बनना चाहता है", यह आकाद्यों सत्य है। उसका संसार भी वैसा ही बनता है, जैसे उसके संस्कार होते हैं। इस प्रकार मनुष्य अपने पीछे वैसा ही इतिहास छोड़ जाता है जैसा उसका चरित्र होता है, क्योंकि किसी भी व्यक्ति के संस्कारों की समष्टि, उसकी सभी मानसिक वृत्तियों का संकलन ही उसका चरित्र है। अच्छे विचारों तथा संस्कारों से ही उसका चरित्र अच्छा होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारा व्यक्तित्व हमारे संयमित आचरण पर निर्भर है और हमारा आचरण हमारे संस्कारों पर तथा संस्कार विचारों पर निर्भर है। संयमित मन हमारे मित्र के समान आचरण करता है और असंयमित मन एक शत्रु की भांति। यदि मन तथा इन्द्रियाँ अनुशासित और संयमित हैं तो मनुष्य जीवन के लक्ष्य तक पहुँच सकता है। व्यक्ति की भावनाएँ जितनी अनुशासित तथा संयमित होंगी उसका व्यक्तित्व भी उतना ही स्वस्थ और उच्च होगा। इस प्रकार हम पाते हैं कि व्यक्ति अपने जीवन लक्ष्य को तभी प्राप्त कर सकता है जब उसका चरित्र उत्तम हो और चरित्र की उत्कृष्टता के लिए आवश्यक है कि उसके विचार, संस्कार, और व्यवहार उत्कृष्ट हों। इसलिये अपने भविष्य के निर्माण के लिए हमें वर्तमान में अधिक श्रम और अधिक शुद्धतापूर्ण जीवनशैली अपनानी होगी, क्योंकि यह सत्य है कि भूतकाल ने वर्तमान का निर्धारण किया है, हमारे वर्तमान विचार तथा व्यवहार हमारा भविष्य निर्धारित करेंगे। यह व्यक्तित्व विकास को नियंत्रित करने वाला मूलभूत सिद्धान्त है। आज आवश्यकता है कि हम छोटे तथा साधारण कार्य को भी इतनी प्रतिबद्धता से सम्पन्न करें कि उसके परिणाम से हमारी उत्कृष्टता प्रकट हो।

पता - ए.एस. 302, सुमंगल अपार्टमेंट, लिंक रोड, बिलासपुर (छ.ग.)

२१ जून तीसरा
अन्तर्राष्ट्रीय योग
दिवस पर

निष्काम भाव से कर्मरत रहने का नाम ही योग है

- विवेक प्रिय आर्य, मथुरा उत्तरप्रदेश

हम अपने बनाए मंदिरों को साफ-सुथरा रखते हैं, लेकिन कैसा आश्चर्य है कि ईश्वर की बनाई “अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पुरयोध्या” अर्थात् आठ चक्र और नौ दरवाजों वाली अयोध्या नगरी में यानी अपने शरीर रूपी मानव मंदिर में हम शराब, मांस, अंडे, भांग, बीड़ी, सिगरेट का धुआं सब कुछ डालते हैं। जीवन कला के अभ्यासी को आहार शुद्धि का विचार करते



हुए यह भी ध्यान रखना है कि हमारी कमाई भी शुद्ध और सात्विक हो, उसमें कर्मचारियों का रक्त नहीं सना हो।

सामान्यतया समझा जाता है कि योग का अर्थ अग्नि या सूर्य के समक्ष महीनों वर्षों तपना नहीं होता। क्योंकि यदि तपना ही होता तो मोक्ष का अधिकारी पतंगा होता है जो दीपक पर अपने स्वाहा कर देता है। न जल में वर्षों खड़े होने पर मोक्ष मिलता है, क्योंकि बगुला घंटों पानी में ध्यान मग्न खड़ा रहता है और मछली तो जल में ही उत्पन्न होती है तथा जीवन पर्यन्त जल में ही रहकर अंत में जल समाधि लेती है। इसी प्रकार ठंडेश्वरी या मौनी बाबा का क्षणिक नाटक है। प्रदर्शन मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने तथा कुछ कमाने का चोखा धंधा है। योग का वास्तविक अर्थ है कि अपने वर्णाश्रम के अनुसार निष्काम भाव में कर्मरत रहना, वासनाओं की अग्नि में इन्द्रियों को तपाकर निर्विषय कर देना और जीवन संयम के समस्त दुःखों को प्रभु प्रसाद समझकर उनसे सम्पूर्ण पुरुषार्थ के साथ विषांक रूप में जूझते रहना। प्रायः समझा जाता है कि लोकोप कर्म बंधनः अर्थात् कर्म लोक बंधन का कारण है। लेकिन योग इसके विपरीत हमें सिखाता है कि कर्म ही बंधन मुक्ति का साधन है। अब प्रश्न है कि कौन सा धर्म है

जो योग बन गया है, यज्ञ बन गया है। कर्म में यह कौशल कि वह यज्ञ बन जाये, यही योग है और यही जीवन कला है। भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि “योगः कर्मसु कौशलम्” अर्थात् कर्म में कौशल उसे यज्ञमय में बना देता है, प्रभु से वियोग नहीं योग करता है अथवा मिलाता है। इस प्रकार ज्ञान पूर्वक किए गए कर्म जब यज्ञ का रूप लेते हैं तो वही उपासना बन जाते हैं।

ज्ञान, कर्म और उपासना का यह त्रिवेणी संगम मानव कामोक्ष तीर्थ बन जाता है। कानों से हम भद्र सुनें, आंखों से अभद्र देखें, धरती को मधुरता से सींचने के लिए शहद जैसा मीठा और हितकारी भद्र वचन कहें। मस्तिष्क से भद्र चिंतन, हाथों से भद्र कर्म और पांव से भद्र चलन करें तब होगा हमारा आत्म ज्ञान। इसी को वेद माता ने इस षड् योग भी कहा है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में इसे समत्व योग कहा है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! संसार के सारे दुःख संग के कारण है। योग और कुछ नहीं है कर्म करते हुए सिद्धि-असिद्धि में समभाव बनाए रखना, परमात्मा के साथ युक्त रहना, अपने को उसी के हाथों से देना ही योग है। वहीं हमारे भीतर के शत्रु काम, क्रोध, लालच, लालसा, झूठ, बेईमानी, दुराचार आदि हैं। मनुष्य कितने ही आविष्कार क्यों न कर ले, कितना ही बड़ा साम्राज्य क्यों न खड़ा कर ले, लेकिन जब तक उसके भीतर ये शत्रु बैठे हैं तब तक बाहर की जीत, जीत नहीं हार है। क्योंकि जितना ही वह लालच और लालसा, झूठ और बेईमानी से बाहर का सामान जुटाता जाएगा उतना ही उसका लालच, उसकी लालसा, उसकी बेईमानी, उसकी दूसरों का खून पीने की प्यास बढ़ती जाएगी। जीत तो तभी होगी जब जिस प्यास को बुझाने तुम निकले हो, वह प्यास बुझ जाएगी। क्या सिकंदर की प्यास

बुझी ? क्या नेपोलियन की प्यास बुझी ? क्या हिटलर और मुसोलिनी की प्यास बुझी ? यह सब लालसा की प्यास में ही डूब गये। प्रश्न यह है कि क्या कोई ऐसा रास्ता है जिससे मनुष्य भीतर के इन शत्रुओं से जीता जा सके। इसका उत्तर भारत की संस्कृति के पास है। वह है योग दर्शन के रचयिता पतञ्जलि मुनि के पांच यम। अपने तथा मानव समाज के जीवन के भवन को वैदिक संस्कृति के उन पांच आधार

स्तंभों पर खड़ा कर देना, जिनकी नींव पाताल तक तथा चोटी हिमालय के शिखर तक चली गई है, यह पांच यम हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन्हीं को योग भी कहा गया है। योग का अर्थ अपने को संपूर्ण रूप से मानव-देव-ऋषि बनाना है और इसका साधन प्रभु के मंदिर मानव शरीर की एक-एक इन्द्रिय को उपयोगी बनाना है। पता: मथुरा, उत्तरप्रदेश, पो. ०९१७१९१०५५७

विचार-बोध

ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम्

- डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री

दीपकेनैकेन कृपया ज्वालयतु रे दीप पंक्तिम्।

(साहित्य अकादमी एवं राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त)

रायबरेली (म.प्र.)

राष्ट्र रक्षार्थं हि सततं सैनिका नः विगतनिद्राः,

सञ्जिताः सीमाप्रदेशे सर्वथा सन्नद्धमुद्राः।

देशप्रेम रस्तदर्थं वाचयस्व सदा प्रशस्तिम् ॥१॥

ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम्।

मूढता दीनता जड़ता प्रतिदिनं वर्धते देशे,

ज्ञान हीन जनाश्च धूर्ताः निःसृताः खलु साधुवेशे।

ज्ञान-ज्योतिरुदेतु नित्यं नाशयतु तामिह-शक्तिम् ॥

ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥२॥

राजनीतिरियं सखे ! ननु वर्तते गणिकेव चेष्टा,

नैव विश्वासः सतामिह धारणेयं यदि निविष्टा।

कण्टकाकीर्णेषु पथिषु दर्शयसि किं स्वाऽनुरक्तिम् ॥

ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥३॥

शोषिताश्च बुभुक्षिताश्च वस्त्रहीनजना अनेके,

पर्यटन्ति विभिन्न पथिषु चेतनावन्तः स्वदेशे।

जड़े पाषाणे परं त्वं दर्शयसि किं वृथा भक्तिम् ?

ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥४॥

भ्रष्टमाचरणं जनेषु वर्धते तदु महारोगः,

जाति-वर्ग-विशेषतावादः जृम्भते ननु महाशोकः।

रोग-शोक-निवारणार्थं चिन्तयतु काश्चिदपि युक्तिम् ॥

ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥५॥

लोकतन्त्रमिदं विचित्रं नैव चिन्तयते दरिद्रान्,

राजनेतारस्तु सततं साधयन्ति सदा समृद्धान्।

सत्यनिष्ठा-विरहितेभ्यो दापयिष्यति को विमुक्तिम् ?

ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥६॥

मातरं पितरं गुरुं कः सेवते बहुप्रीतियुक्तः.

संस्कृतं वेदोपनिषदं कः पठति श्रद्धाऽभिभूतः।

उत्तरं प्राप्तुं प्रयुञ्जे नाम्नि ते प्रथमा-विभक्तिम् ॥

ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥७॥

योग-सुविचार

जीवन मुक्त योगी पुरुष सोते-जागते, चलते-फिरते ईश्वरप्रणिधान के द्वारा अपने स्वरूप में ही स्थित होता है, उसके संशय, अज्ञान, हिंसा आदि नष्ट हो गए हैं और वह योगी अविद्या आदि क्लेशों तथा अविद्याजन्य-संस्कारों का नाश करता हुआ, नित्य योगाभ्यास करता हुआ मोक्ष के आनन्द का अधिकारी बन जाता है।

- डॉ. अशोक आर्य



जो प्राणी प्रभु भक्त होता है, वह अज्ञानियों में सदा ज्ञान बांटता है, जो प्रसाद व दीप्ति से रहित होते हैं, उन्हें यह दीप्ति पाने में सहायक होता है तथा ऐसा प्राणी सदा उषाकाल में उठ जाता है। इस बात को यह मन्त्र इस प्रकार समझा रहा है :-

केतुकृष्णवन्नकेतवेपेशोमर्याअपेशसे ।

समुषद्भिरजायथाः ॥ (ऋ. १, ६, ३)

इस मन्त्र में मुख्य रूप से तीन बातों पर प्रकाश डाला गया है, जो इस प्रकार है :-

१. ज्ञान का प्रसार ही जीवन का ध्येय :

जो व्यक्ति अपनी इन्द्रियों को अपने शरीर रूपी रथ में जोड़ता है अर्थात् जो व्यक्ति अपनी इन्द्रियों को कभी स्वाधीनता से विचरण नहीं करने देता बल्कि इस प्रकार अपने काबू में रखता है, जिस प्रकार एक उत्तम सारथी अपने घोड़ों को अपने काबू में रखता है। इस प्रकार इन्द्रियों को बस में रखते हुए वह प्रभु भक्त प्रभु के चिन्तन भजन में लगा रहता है, प्रभु के स्मरण व कीर्तन में लगा रहता है। प्रभु को साक्षात् करने का यत्न करता है, प्रभु दर्शन का प्रयास करता है। ऐसा व्यक्ति उन लोगों के लिए ज्ञान का प्रकाश करने वाला बनता है, जो ज्ञान से रहित होते हैं। भाव यह कि जो व्यक्ति किन्हीं कारणों से ज्ञान नहीं पा सकते, यह व्यक्ति उन्हें उत्तम ज्ञान देकर अपने समकक्ष बनाने का यत्न करता है। इस प्रकार यह ज्ञान का प्रसार ही वह अपने जीवन का उद्देश्य, अपने जीवन का ध्येय बना लेता है।

२. लड़ाई झगड़ों को कम कर दीप्ति बढ़ाना -

यह प्रभु भक्त अपने साथ ही साथ अन्यो को भी दीप्त करने वाला होता है। हे मानव ! यह प्रभु भक्त सब को आत्मवत् ही, अपने समान ही समझते हुए अपने जैसा ही बनाने का यत्न करता है। जो सफलताएँ, जो प्राप्तियाँ इसने

पाली होती है, उन्हें दूसरों को भी प्राप्त कराने का यत्न यह करता है। जो दीप्ति रहित होते हैं उन्हें दीप्त करने का यत्न करता है। ऐसे लोगों को वह स्वास्थ्य सम्बन्धी

ज्ञान देता है ताकि उस ज्ञान पर चलते हुए वह भी उत्तम स्वास्थ्य पाकर स्वास्थ्य में दीप्त हो सकें। इतना ही नहीं वह उनमें एक दूसरे के साथ व्यवहार कैसा किया जाना चाहिए, इसको भी समझाता है। परस्पर के व्यवहार की विभिन्न विधियों का उन्हें शिक्षण देता है, उन्हें बताता है। एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हुए रहने का उपदेश देता है। इस प्रकार परस्पर प्रेम में वृद्धि करता है प्रेम की इस वृद्धि से तथा आपसी झगड़ों में कमी करवा कर, उनके लड़ाई झगड़ों को कम करवा कर उनमें दीप्ति को बढ़ाने का कारण बनता है।

३. उषाकाल में उठना :-

मन्त्र में जिस तीसरी बात पर प्रकाश डाला गया है वह है - ऐसा व्यक्ति सदा ही उषाकाल में ब्रह्म मुहूर्त में, सूर्य की प्रथम किरण निकलने के साथ ही उठ खड़ा होता है, शैय्या को त्याग देता है। इस समय कभी भी सोया हुआ दिखाई नहीं देता। वह यह जानता है कि जो प्रातःकाल जल्दी उठता है, प्रभु उस पर सदा आशीर्वादों की वर्षा करता है तथा जो सोया रह जाता है, ऐसे व्यक्ति के तेज को उदय हो रहा सूर्य हर लेता है। यह तेज हीन, तेज रहित हो जाते हैं। इसलिए प्रातःकाल उषाकाल में निश्चित ही वह उठ खड़ा होता है।

पता : १०४, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशम्बी-२०१०१०,
जिला गाजियाबाद (उ.प्र.)

संसार का उपकार करने के मुख्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वसुओं की श्रेणी में आने वाले विद्वानों को समस्त मानव समाज को उन्नति के पथ पर लेकर चलने का गुरुत्तर कार्य करना चाहिए। संसार का उपकार करने आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य देव दयानन्द ने बताया है। साथ ही सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझने का संदेश दिया है। समाज को निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रखने का दायित्व वसुओं की श्रेणी में आने वाले विद्वानों से अपेक्षित है।

अब पहला प्रश्न उठता है कि वसु कौन होते हैं ? साधारण शब्दों में वसु अर्थात् निवास स्थान। धरती माता हम सभी प्राणियों के लिए वसु है जिसके आश्रय में हम रहते हैं। अब इस यौगिक अर्थ को समझे तो जिन विद्वानों के आश्रय में अर्थात् दिखाए सही श्रेय मार्ग पर लोग चलते हैं वह मनुष्यों के लिए वसु की श्रेणी में आते हैं। परन्तु क्या मनुष्य समाज का नेतृत्व करना उन सभी को एक साथ एक उन्नति के मार्ग पर ले चलना क्या इतना सरल कार्य है। इसके लिए विद्वानों को किन बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ेगा यह जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके लिए ऋग्वेद का मंत्र स्पष्ट संदेश देता है।

पाकत्रा स्थन देवा हत्सु जानीय मर्त्यम् ।

उपद्र्युं चाद्र्यु च वसवः ॥

अर्थात् हे वसु देव विद्वानों आपके लिए अपेक्षित है कि आप पाकत्रा अर्थात् परिपक्व व ज्ञान वाले बनो और मरणधर्मा मनुष्यों की प्रकृति को अपने अन्तःकरण में सही सही पाचनों और नीर क्षीर विवेकी बनकर सही और गलत, सत्य और असत्य को यथावत

पहचान कर सबको एक साथ प्रगति के पथ पर लेकर चलें।

समाज का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति के लिए परिपक्व ज्ञान वाला होना आवश्यक है यानि यदि विद्वान समाज का नेतृत्व करना चाहता है तो उसे सभी अलग-अलग वृत्तियों वाले मनुष्यों उनकी समस्याओं और समस्याओं के समाधान का सम्यक ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। क्रान्तदर्शी देव दयानन्द महान समाज सुधारक बनकर सम्पूर्ण विश्व के उत्थान के लिए ईश्वरीय वेदज्ञान का मार्ग प्रशस्त करने से पूर्व सम्पूर्ण समाज उसकी समस्याओं विषमताओं कुरीतियों पाखण्डों का पूरा यथावत समयक परिपक्व ज्ञान प्राप्त किया तभी उनका समाधान वेद ज्ञान के आधार पर दिया।

इसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द ने दलितोद्धार का बीड़ा उठाने से पूर्व दलितों की सामाजिक स्थिति, उनकी समस्याओं और समाज में फैले जातिवाद के विष को समझा और फिर इस परिपक्व ज्ञान को पाकर ही समाधान प्रस्तुत करते हुए दलितोद्धार सभा की स्थापना करके उसका नेतृत्व किया। अर्थात् समाज का नेतृत्व करने वाले विद्वानों को समाज की स्थिति का संपूर्ण ज्ञान, समस्याओं का आकलन और समाधान लेकर ही प्रयास करना पड़ेगा।

समाज को उन्नति के पथ पर ले जाने के लिए विद्वानों द्वारा नेतृत्व देने की स्थिति को घर के मुखिया द्वारा पूरे परिवार को एकजुट रखकर सबका कल्याण करने की कोशिशों से बड़ी आसानी से समझा जा सकता है। घर के मुखिया को घर के सभी सदस्यों की मनोभावनाओं अन्तर्विरोधों को उनके आपसी संबंधों

के आलोक में समझ कर एकजुट रखने का प्रयास करके निर्णय लेने होते हैं। सास-बहू, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, पिता-पुत्र पुत्री सभी संबंधों की गरिमा और उनके आपसी वैमनस्य का ध्यान हर फैसले का आधार बनता है। यदि इसका सम्यक परिपक्व ज्ञान मुखिया को नहीं होगा तो परिवार बिखर सकता है। ऐसे में समाज का नेतृत्व करने वाले विद्वान वसु नेता की स्थिति कपास उगाने वाले किसान सरीखी नहीं अपितु सूत कातने वाले व्यक्ति जैसी होती है जो भिन्न-भिन्न स्थानों सभ्यताओं की मानव प्रवृत्ति रूपी रईयों को मिलाकर एक ऐसा सूत कातने का यत्न करता है जिससे उन्नति प्रगति के कल्याण

रूपी वस्त्र का निर्माण हो सके। अर्थात् नेता विद्वान अलग-अलग प्रवृत्तियों योग्यताओं के लोगों को साथ लेकर कल्याण मार्ग के पथ राष्ट्र का निर्माण करने के लिए अग्रसर हो सके। यहां विद्वानों को कुटिल और सरल मनुष्यों, झूठ और सत्य का यथावत ज्ञान होना भी अत्यन्त आवश्यक है। विद्वानों को स्वयं और समाज को दोहरे चरित्र वाले कपटी, स्वार्थी, चापलूस किस्म के लोगों से बचाना अत्यन्त आवश्यक है। ऐसे कपटी चापलूस अपने स्वार्थ के लिए समाज का पतन करवा देते हैं।

पता : ६०२, जी.एच. ५३, सैक्टर-२०, पंचकूला

मुक्तक

हे माँ तुम्हें प्रणाम

कहने को तो मात्र शब्द दो सूक्ष्मातिसूक्ष्म लगते हैं।
समाविष्ट संसार मगर है उसको माता कहते हैं ॥१॥

०

प्रथम नमामि जननि को मेरी जिसने दी ये काया प्यारी।
उस माई के चरणकमल से व्यर्थ ये वैभव लगते हैं ॥२॥

००

सुर नर वन्दित गौमाता की पूजा को मन उत्कंठित रहता है।
दूध मूत्र गोरस से जिसके आधि व्याधि जरा कटता है ॥३॥

०००

हम हैं जिसके पुत्र और जो भूमि हमारी माता है।
शस्य श्यामला सुजला सुफला भारत माँ का वन्दन करते हैं ॥४॥

०००

वस्त्र तुम्हारा है रत्नाकर हे वसुन्धरे ! तुम्हें प्रणाम।
बलबुद्धिविधायश आयु दे नमन धरित्री करते हैं ॥५॥

०००००

रचयिता : डॉ. रत्नाकर चौबे त्रिपुण्ड,
(युवा साहित्यकार, संस्कृताचार्य एवं रंगकर्मी)
सी-१४/३, रिफाइनरी आवासीय परिसर, आगासोद,
बीना, जिला-सागर (म.प्र.) पत्रालय कूट संख्या-४७०१२४

“घरेलू मामला”

रात भर पड़ोसी के घर से स्त्री के चीखने-कराहने की आवाज आती रहती है। सुबह स्त्री के शरीर पर चोटों के निशान स्पष्ट दिखते। पड़ोस की एक पढ़ी-लिखी स्त्री ने उसे समझाते हुए कहा - “क्यों इतनी प्रताड़ना सहती हो ? विरोध करना सीखो। पलटकर जवाब दो। थाने में रिपोर्ट करो। अक्ल ठिकाने आ जायेगी तुम्हारे पति की।”

पीड़ित स्त्री ने अपनी चोटों को छिपाने की कोशिश करते हुए कहा - “ये हमारा घरेलू मामला है। आपको इसमें दखल देने की जरूरत नहीं। वह मेरा पति है।”

पढ़ी लिखी पड़ोसन ने अपना माथा पीट लिया।

“पिटाई”

नारी जागरण समिति का अध्यक्ष था वह। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उसने स्त्री स्वतन्त्रता समानता पर शानदार भाषण दिया। तालियां बटोरी। रात में शराब पीकर घर पहुंचा और दाल में नमक कम होने पर अपनी पत्नी को जमकर पीटा।

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा - पाटनी कालोनी,
भरतनगर, चन्दनगाँव, छिंदवाड़ा (म.प्र.)

शामयिक पर्यावरण की रक्षा कैसे करें.

पर्यावरण दिवस पर विशेष

डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

पूर्व सम्पादक: "वैदिक सार्वदेशिक"

५ जून हर वर्ष समूचे विश्व में पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसकी शुरुआत सन् १९७२ में हुई। भारत में वैदिक युग से ही पर्यावरण संबंधी चेतना निरन्तर विकसित होती रही है। पुराणों में ताल, तलाबों, चावड़ियों के निर्माण को पुण्य कर्म की संज्ञा दी गई है। वृक्षारोपण का बड़ा भारी फल बताया गया है और नदियों के प्रति श्रद्धा भावना विकसित कर इनके पवित्रीकरण कर बल दिया गया है।

भारत को पर्यावरण प्रदूषण से यदि बचना है तो उसे अपनी पुरानी वैदिक संस्कृति की ओर लौटना होगा और उन जीवन मूल्यों को अपनाना होगा जो वेदों ने स्थापित किये थे। इस दिशा में बढ़ते हुए हमें सर्वप्रथम अपने वृक्षों की सम्पदा को बचाना और बढ़ाना होगा, पशु, धन को संरक्षित व विकसित करने के लिए बूचड़खाने बन्द करने होंगे व शाकाहार को अपनाना होगा, अपनी नदियों व तालाबों का अस्तित्व बचाना होगा, नदी जोड़ों अभियान को राष्ट्र धर्म मान कर पूरा करना होगा, बड़े उद्योगों की बजाय लघु कुटीर उद्योगों का जाल पूरे देश में फैलाना होगा, ईंटों के भट्टों पर प्रतिबन्ध लगा कर नई तकनीक से ईंट बनाने को प्रोत्साहन देना होगा, रासायनिक उर्वरकों व रासायनिक कीट नाशकों का प्रयोग पूरी तरह वर्जित कर गोबर, कम्पोस्ट, केंचुआ खाद के विकल्प तैयार करने होंगे, पोलिथीन व प्लास्टिक वस्तुओं का निषेध करना होगा, धूम्रपान आदि पर प्रतिबन्ध लगाना होगा। मृदा, जल, वायु, आकाश से संबंधित जितने भी पर्यावरण-प्रदूषण कारक देश में मौजूद हैं उन सभी के उन्मूलन के लिए एक वृहद योजना तैयार करनी होगी जिसमें ऊपर लिखी मोटी-मोटी बातों को अनिवार्य रूप से शामिल करना होगा।

व्यक्तिगत स्तर पर हम भी पर्यावरण-प्रदूषण को

कम करने में सहायक बन सकते हैं यदि हम पोलिथीन व प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का इस्तेमाल बन्द कर दें, पानी की लीकेज को कंट्रोल करें, पानी का बेतरतीब इस्तेमाल करना छोड़ दें, पेयजल से स्कूटर, कार, मोटर साइकिल की धुलाई बन्द कर दें, वृक्षों पर कील ठोक कर विज्ञापन पट्ट न लगायें, पशुओं के साथ दुर्व्यवहार न करें, मांसाहार को छोड़ शाकाहार अपनायें, कार व बाइक का कम से कम इस्तेमाल करें, रेफ्रिजरेटर, कूलर, ए.सी. का प्रयोग कम से कम करें, वन महोत्सव पर साल में एक वृक्ष अवश्य लगायें और उसे पानी देने की व्यवस्था करें यदि आपका किचन गार्डन है तो फल सब्जियों के पत्ते-छिलके से तैयार केंचुआ खाद का इस्तेमाल सब्जी उगाने में करें, टी.वी., रेडियो की आवाज कम रखें, घर का कूड़ा-कर्कट बाहर न फेंक कर ड्रम में इकट्ठा करें ४० वॉट के बल्ब से काम चल सकता है तो ६० व १०० वाट का बल्ब इस्तेमाल न करें। इन सब बातों के लिए आप अपने पड़ोसी, अपने मित्रों, अपने सगे-सम्बन्धियों को भी प्रेरित कर सकें तो पर्यावरण को स्वच्छ रखने में आपका भी महनीय योगदान रहेगा। निःसन्देह भारत सरकार का पर्यावरण एवं वन मंत्रालय पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने के लिए हर वर्ष करोड़ों रुपया विज्ञापनों पर खर्च करता है, तीन प्रान्तों की बड़ी-बड़ी ३८ झीलों को संरक्षित करने की दिशा में ठोस कदम

उठाये हैं। २० राज्यों की ३४ नदियों को राष्ट्रीय नदी संरक्षण कार्यक्रम में शामिल किया है २६७ स्वच्छ विकास तन्त्र परियोजनाएँ शुरू की हैं, क्लोरो फ्लोरो कार्बन और हेलोन के उत्पादन और खपत को नियंत्रित करने की दिशा में ठोस कदम उठाये हैं, गिद्धों की संकटापन्न प्रजातियों को संरक्षित करने के पग उठाये हैं, वन्य क्षेत्र को विकसित करने की योजनाएँ बनाई हैं, वन्य मरुस्थल की रक्षा के लिए सुरक्षात्मक उपाय दूँडे हैं, बढ़ते मरुस्थल को रोकने के लिए डेजर्ट एण्ड ड्रॉट प्रोन एरिया डेवलपमेंट प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं, गाँवों के तालाबों का पुनः निर्माण कराया जा रहा है। ये सब कदम अपनी जगह ठीक हो सकते हैं, भले ही वे कागजी अधिक क्यों न हों और भ्रष्टाचार की भेंट क्यों न चढ़ रहे हों। सवाल यह है कि यदि भारत सरकार और प्रान्तीय सरकारें पर्यावरण प्रदूषण को लेकर वास्तव में चिन्तित व ईमानदार हैं तो अब तक देश के बूचड़खाने बन्द क्यों नहीं हुए? मांसाहार को प्रोत्साहित क्यों किया जा रहा है? धूम्रपान पर पूर्ण प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगा है? रासायनिक उर्वरकों और रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग वर्जित क्यों नहीं हुआ है? नदियों का जुड़ाव अभियान बन्द क्यों कर दिया गया? लघु गुटीर उद्योगों के स्थान पर विशाल मिल्स, ईट भट्ट, डिस्टिलरीज, सुगर मिल्स, क्लाय मिल्स क्यों पनप रहे हैं? नदियों में प्रदूषित जल क्यों प्रवाहित हो रहा है? पोलिथीन और प्लास्टिक वस्तुओं का निर्माण प्रतिबंधित क्यों नहीं है? जाहिर है कि देश के पर्यावरण को दूषित करने वाले ये सभी कारण न केवल मौजूद हैं बल्कि दिन-व-दिन फलते-फूलते भी जा रहे हैं जिससे पर्यावरण शुद्धि का नारा एक ढकोसला बनता जा रहा है और सरकार की ईमानदारी, कार्यशैली और इच्छा-शक्ति पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है।

पर्यावरण-शुद्धि के लिए हमारे पूर्वजों ने यज्ञ-पद्धति को विकसित किया था। बाढ़ और सूखा से निपटने के लिए यज्ञों की विशेष महत्ता रही है क्योंकि वे वर्षा करा भी सकते हैं और रुकवा भी सकते हैं। रोग निवारण में भी

यज्ञ धूम का विशेष महत्व रहा है। यज्ञ में समिधा (लकड़ी), सामग्री (जड़ी-बूटियाँ), मिष्ठान (किशमिश, शकर, बादाम, अखरोट आदि), घृत (गाय का घी) का प्रयोग होता है जिसका अर्थ है इस पवित्र धार्मिक परम्परा को निभाने के लिए हमें अपनी वृक्ष सम्पदा, वन्य सम्पदा, जड़ी-बूटियों व गोधन को अनिवार्य रूप से संरक्षित रखना चाहिए। आज भले ही यूरोप और अमेरिका में यज्ञ-पद्धति को लेकर अनुसन्धान हो रहे हों और उनमें परमाणु-रोधक शक्ति की महत्ता स्वीकारी जा रही हो लेकिन हमारे देश में इसे साम्प्रदायिक कर्म-काण्ड मात्र मान कर उपेक्षित किया जा रहा है। वेद विरोध ई सम्प्रदायों को तो यह फूटी आँख नहीं सुहाता। प्राचीन-काल में जब भी देश में कहीं अति-वृष्टि या अकाल की स्थिति पैदा होती थी तो यज्ञ कराने पर विशेष बल दिया जाता था और उसका तात्कालिक फल मिलता था। आज भी वैज्ञानिक परीक्षणों से यज्ञों की यह फल-श्रुति सिद्ध हो चुकी है। लेकिन साम्प्रदायिक मूढ़ता के शिकार लोग कभी इसे पर्यावरण-प्रदूषण बढ़ाने वाली क्रिया घोषित करते हैं तो कभी घी, ईंधन जड़ी-बूटियों के अभाव और बर्बादी का रोना रोकर इसे निरस्त करने का प्रयास करते हैं। इन सभी तर्कों को खाजिरज करते हुए महर्षि दयानन्द और उनके आर्य समाज ने न केवल यज्ञ को व्यक्ति की दिनचर्या घोषित किया बल्कि इस प्राचीन परम्परा को लोकमानस में स्थापित कर इसके वैज्ञानिक पहलुओं को भी रेखांकित किया।

यज्ञ की यह परम्परा न केवल हमारी वन्य सम्पदा, हमारे पशु धन के संरक्षण का अक्षय सन्देश देती है बल्कि भोग्य पदार्थों के समान वितरण और आध्यात्मिक जीवन-जीने का अक्षय उपदेश भी देती है। इससे वैदिक जीवन मूल्यों की जीवंतता और महत्ता का भी रहस्योद्घाटन होता है। हमारा जीवन यदि यज्ञमय हो जाये तो भारत पुनः अपने स्वर्ण काल की ओर लौट सकता है तथा भारत ही नहीं पूरी विश्व को पर्यावरण प्रदूषण से मुक्त कर सकता है। क्या भारत और संयुक्त राष्ट्र संघ इस दिशा में कुछ सोचेगा, कुछ करेगा?

पता : सभा भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी...

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी ।

चमक उठी सन सनतावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

कानपुर के नाना की, मुँह बोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी ।

वीर शिवाजी की गाथाएँ उसको याद जबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के धार,
नकली युद्ध-व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवाड़ ।

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मी बाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
सुघट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आयी झाँसी में

चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव को मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई, हाथ ! विधि को भी नहीं दया आई ।

निसंतान मरे राजाजी रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अग्रना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया ।

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

अनुनय विनय नहीं सुनती है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारे, अब तो पलट गई काया,
राजाओं नवाबों को भी उसने पैरों दुकराया ।

रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महारानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

- सुभद्रा कुमारी चौहान : कविता कोष

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

मैं दलित था वो बामन। हम दोनों अच्छे दोस्त थे। एक समय था जब मैं उसका सम्मान करता था। वह मेरे घर आता तो मुझे अच्छा लगता। मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता। मुझे लगता था कि उसे नहीं मालूम कि मैं दलित हूँ। उसे जाति, राजनीति की बहुत जानकारी थी। वह था भी शुद्ध, शाकाहारी ब्राह्मण। एक बार मैंने उसे बताया भी अपनी जाति के बारे में। उसने कहा - मैं ये सब नहीं मानता, मुझे अच्छा लगा कि दुनिया में बदलाव आ रहा है। अब पहले जैसा माहौल नहीं रहा। वह मेरे घर आता, चाय पीता, नाश्ता करता। कभी-कभी भोजन भी करता। मेरी माँ को मेरी तरह आई कहता। उस समय जो मैंने कहा उससे। जो मुझे अब लगता है कि नहीं कहना चाहिए था। एक दोस्त खो दिया। उस समय लगा था कि सही किया। ये तो पता था कि हमारे समाज के पिछड़े और शोषित होने में ब्राह्मणों का बड़ा योगदान है और ये योगदान भी मेरे मित्र या परिचित सवर्ण मित्रों का नहीं है। उनके पूर्वजों का है। तो इसमें आज के इन सवर्णों खासकर ब्राह्मणों का क्या दोष ?

उस समय हम सब पढ़-लिखकर नौकरी तलाश रहे थे। एक बार मैं अपने मित्र के सवर्ण मित्रों के साथ था। उन्होंने आरक्षण को कोसा। मेरे बामन मित्र ने उन्हें इशारे से रोका। लेकिन मुझे बहुत बुरा लगा। फिर मेरा नौकरी का संघर्ष खत्म हो गया। मेरी नौकरी लग गई। लेकिन मिलना-जुलना पहले की तरह था। अखबारों, समाचार चैनलों में कभी-कभी सुनता, पढ़ता कि दलित महिला के साथ बलात्कार, तो खून खौल जाता। लगता कि अभी भी कुछ बदला नहीं है खासकर गांवों में। एक बार जब मैंने उससे कहा था कि मैं दलित हूँ तो उसने पूछा था। क्या हो चमार, मैहतर, भंगी। हो तो हो, पहले हम दोस्त हैं। “मैंने कहा - नहीं, महार हूँ।”

महार मतलब ? उनसे भी नीचे वह हिन्दी क्षेत्र का व्यक्ति था। नागपुर में चार-पांच साल पहले ही आया था। महाराष्ट्र क्षेत्र में महार जाति के लोग ज्यादा है।

मैं भी पहले कट्टर नहीं था। लेकिन नौकरी लगने के बाद हमारा अजाक्स का संगठन बना था। जिससे मुझे जोड़ लिया गया था या जुड़ना पड़ा था। मुझे अक्सर अजॉक्स सभा की मीटिंगों में बुलाया जाता। जाति उद्धार की बातें की जाती। सामने अम्बेडकर की तस्वीर रखी जाती। वही एक तस्वीर। नीले रंग के सूट में अम्बेडकर। फिर हमारे कुछ नेताओं ने अम्बेडकर की राह पर चलते हुए बौद्ध धर्म स्वीकारा। फिर उन्होंने बाकी सभी दलितों खासकर महार जाति के लोगों को बौद्ध धर्म स्वीकारने के लिए कहा। जिससे हम अपने हक, अधिकारी की लड़ाई लड़ सके। इस सबके लिए मीटिंग हो, सभा हो। अम्बेडकर जयंती हो या बौद्ध धर्म का कोई कार्यक्रम। हमारे दलित नेता भर-भर के ब्राह्मणों को कोसते। अपनी बर्बादी, दुर्दशा का कारण ब्राह्मणों को बताते। ब्राह्मणों के अत्याचारों के ऐसे-ऐसे किस्से, जो सच्चे थे, सुनाते कि हमारा खून खौल उठता। हिन्दू धर्म के विषय में उनके देवी-देवताओं के विषय में ऐसी बातें होती थी कि यही बात यदि कोई मुसलमान कहता तो दंगे-फसाद हो जाते हमारे नेता हमें संगठित रहने की बात करते। बौद्ध धर्म उन्होंने स्वीकार तो कर लिया था लेकिन कोई विशेष रुचि या जानकारी बुद्ध के विषय में नहीं थी चूंकि हिन्दू नहीं रहना था सो बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। ग्रहण इसलिए किया क्योंकि बाबा साहेब अम्बेडकर ने किया था। हम स्वयं को बुद्ध से ज्यादा अम्बेडकर के करीब मानते। लेकिन हमें भी एक ईश्वर की जरूरत थी धार्मिक रूप से तो हमने बुद्ध को अपना भगवान माना। हमें बौद्ध धर्म ग्रहण करते समय एक गोल लॉकेट दिया जाता। जिसमें एक तरफ बुद्ध का चित्र था दूसरी तरफ अम्बेडकर का। अब यही हमारे भगवान थे। धीरे-धीरे सारे हिन्दू देवी-देवताओं को हटा दिया गया हमारे घरों से। हमारे विवाह बौद्ध धर्म के रीतिरिवाजों के अनुसार होते थे। न कि हिन्दू धर्म के पंचांगों के हिसाब से।

जब मनु स्मृति की बात हमारे नेता सुनाते कि वेद

सुनने पर शूद्रों के कानों में पिघला शीशा डालने का उल्लेख है। तो मनु से घृणा होने लगी। मनु हमारा सबसे बड़ा शत्रु था। जब शम्बूक वध के बारे में सुनाया जाता तब राम हमारे लिए खलनायक की भूमिका में थे। जब डोल-गंवार-शूद्र-पशु-नारी के दोहे को पढ़कर हमें सत्य से अवगत कराकर हममें रोष बरा जाता तो हमारे विचार कट्टर ब्राह्मण विरोधी होने लगे। मैं भी ब्राह्मण विरोधियों में शामिल हो गया।

मेरे उस ब्राह्मण दोस्त जो कि आर्थिक रूप से निर्बल था। मेरे सामने वही था अपना गुस्सा उतारने के लिए। और मेरे ही घर बैठा था। मैंने अम्बेडकर के प्रसंग को निकालते हुए उन्हें अपनी जाति का उद्धारक कहा। उसने माना। फिर मैंने अपनी जाति के शोषण के लिए ब्राह्मणों को दोषी ठहराया। उसने माना। फिर अचानक से मेरे मुंह से ब्राह्मणों के लिए गालियाँ निकलने लगी और मैंने कह दिया कि तुम भी तो उन्हीं के वंशज हो। हमारे साथ हुए अत्याचार के बराबर दोषी।

“मैंने क्या किया?” उसने मासूमियत से कहा।

“तुम्हारे पूर्वजों ने तो किया।” मैंने क्रोध से कहा।

“तुम बौद्ध धर्म ग्रहण कर चुके हो तो तुममें करुणा का भाव उत्पन्न होना चाहिए। लेकिन तुम बौद्ध नहीं अम्बेडकर पंथी बनकर रह गये हो। फिर तुममें और चरमपंथियों में क्या अन्तर रहा। तुम जय-जय अम्बेडकर वादियों की सभाओं से आते हो तब-तब तुम्हारी विचारधारा बहुत कट्टर हो जाती है।” उसके कहने पर मैं क्रोध से भर उठा। “यदि तुम सच्चाई से मुंह चुराना चाहते हो तो चुराओ जो सच है वह सच है।”

वह भी कुछ गुस्से में आ गया। उसने स्वयं को अपमानित महसूस किया। उसने भी गुस्से में कहा - आरक्षण के दम पर सरकारी नौकरी में घुसकर हमारे हक पर डाका डालने वालों ७० साल से आरक्षण चल रहा है तब भी तुम्हारे साथ इंसफ नहीं हुआ। अम्बेडकर होते तो खत्म कर चुके होते आरक्षण। उन्होंने कुछ वर्षों के लिए लागू किया था। वोट बैंक के चलते सरकारें इसे बढ़ाती गईं। मेरी बेरोजगारी के जिम्मेदार तुम हो। तुम्हारे लोग हैं। मैंने कभी दोस्ती बीच जाति नहीं आने दी लेकिन तुम लेकर आये।”

वह उठा और गुस्से में चला गया। उसे अपमानित करके मुझे लगा मैंने अपनी पूरी जाति के अपमान का बदला ले लिया हो। मुझे उस बामन दोस्त से दूर होने की कोई परवाह, चिन्ता नहीं थी। चुनाव के समय मायावती, कांशराम के सवर्ण विरोधी नारों से हम स्वयं को गौरवान्वित महसूस करने लगे। हमने अपना धर्म बदला लेकिन जाति से जुड़े रहे। अपने एक दलित नेता से पूछा भी मैंने कि जब धर्म बदल दिया तो जाति का तमगा लेकर क्यों घूमें?

उन्होंने कहा - जाति नहीं जाती कभी। जाति गई तो आरक्षण भी गया। दुबारा ऐसी बेवकूफी भरी बात मत करना। फिर वापसी पर नमस्ते की तो हमें कहा गया कि अब जय राम बोलना छोड़ो। और आज से मिलते समय हम सब एकदूसरे से जय भीम बोलेंगे। मेरा बामन दोस्त तो जय भीम को पांडव भीम समझता था। एक बार रास्ते में मिला। वो बचकर निकलना चाहता था लेकिन मैं उसका शिकार करना चाहता था। मेरे साथ एक और मेरा अम्बेडकरवादी मित्र था। मैंने उसे रोकते हुए कहा - जय भीम, मेरे बामन मित्र ने कहा।

“जय भीम फिर पूछा” - “पांडुपुत्र भीम”

मैंने कहा - “नहीं, भीमराव अम्बेडकर वाला भीम।” कभी-कभी हम अन्जाने में या जानबूझकर अपनी कट्टरता से अपने क्रोध से अपने से जुड़े कमजोर व्यक्ति को आहत कर बैठते हैं। यदि यही मेरा गरीब बामन मित्र किसी बड़ी नौकरी पर होता। तो क्या मैं इतनी हिम्मत कर सकता था? मैं कलेक्टरी नहीं कर रहा था। क्लर्क था। लेकिन अन्दर का गुस्सा उसी पर निकलना था। मैंने अपने अम्बेडकर पंथी मित्र से परिचय करवाते हुए कहा - ये हैं हमारे दोस्त शर्मा जी।

दोस्त ने कहा - “हम लोग बौद्ध है।”

मेरे बामन मित्र ने जो अपने पिछले अपमान से कुछ नाराज था। उसने कहा - भगवान बुद्ध तो हमारे हैं। हम विष्णु का २३वाँ अवतार मानते हैं। और तुम्हारे अम्बेडकर की शुरुआती शिक्षा एक ब्राह्मण ने आरम्भ की थी। ये तो पता ही होगा तुम्हें। उसके स्वर में व्यंग्य था।

- शेष अगले अंक में

पता : पाटनी कालोनी, भरतनगर, चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

व्यथा आर्यसमाज और हम

-डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज स्थापित किए उनका उद्देश्य था कि इन आर्य समाजों से वेद प्रचार हो। आरम्भ में वेदप्रचार अति श्रद्धा व रुचिपूर्वक चला धीरे-धीरे इसमें अवरुद्धता आने लगी और आज की स्थिति सबके सामने है। आर्यसमाजों में कई कई दल बन चुके हैं अधिकांश आर्यसमाजों में ताल लटके हैं कई स्थानों पर आर्यसमाज न्यायालय के अधीन है। आर्यसमाजों पर कई स्थानों पर धनलोभियों ने कब्जे किए हुए हैं आर्यसमाजी का छद्म रूप दिखाकर ऐसे लोग आर्यसमाजों में प्रवेश कर जाते हैं और आर्यसमाजी बन जाते हैं। इन आर्यसमाजियों का ध्यान आर्यसमाज की चल अचल सम्पत्ति पर रहता है, वेदप्रचार से इनका दूर दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं रहता, केवल एक दो कार्यक्रम कराकर इतिश्री हो जाती है।

जब तक उ.प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पं. इन्द्रराज जी रहे तब तक आर्यसमाजों में वेद प्रचार कार्यक्रम जोरशोर व धूमधाम से होते रहे उत्तम कोटि के उपदेशक न भजनोपदेशक प्रचारक यहां वहां प्रचार करते थे श्रोताओं की भीड़ इतनी अधिक हो जाती थी कि संभालना कठिन हो जाता था। आर्यसमाज का लोगों के मन व मस्तिष्क पर प्रभाव था। स्थान-स्थान पर आर्यसमाज के कार्यक्रमों की चर्चा होती थी।

दिल्ली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में भी स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जब तक अध्यक्ष रहे प्रचार-प्रसार तीव्र तर रहा पश्चात् वहां की व्यवस्था भी विकृत होती गई। अब अनेक वैदिक धर्म के श्रद्धालु अपने बल पर प्रचार कर व करा रहे हैं। जिन्हें वैदिक धर्म से लगाव है वह रुक नहीं सकते, झुक नहीं सकते। वह स्थिति में वेद प्रचार अवश्य ही करेंगे पूरे देश में ही आर्यसमाजों की स्थिति पहले से विकृत हो गई है। आपसी झगड़ों में आर्यसमाज अपनी स्थिति पर अश्रु बहा रहे हैं। न्यायालयों में वाद विचाराधीन हैं जबकि आर्यसमाज की तो न्याय सभा की भी व्यवस्था है और न ही तो उच्च श्रेणी के प्रभावशाली आर्यनेता

गण की है तथा विद्वान व साधु संन्यासीगण है जिन्हें इस ओर ध्यान देना चाहिए यदि संन्यासी जन एक हो जाएं तो आर्यसमाज सुदृढ़ हो सकते हैं। हमारा उद्देश्य वेद प्रचार होना चाहिए इसके लिए ही प्रयत्न करें और आर्यसमाज इसके केन्द्र हों।

आर्यसमाजी पूर्ण विद्वान हो या कम विद्वान हो और यदि विद्वान भी न हो तो श्रद्धावान अवश्य हो जो वैदिक आचरण में श्रद्धा रखते हैं वही लोग परम श्रेष्ठ हैं उन लोगों से अच्छे हैं जो आर्यसमाजों में केवल धन के लालच में आकर धन बटोरने में लगे हैं। आर्यसमाज व संस्थाओं को निजी स्वार्थ हेतु प्रयुक्त कर रहे हैं। यह तो उनके द्वारा प्रचार के कार्यक्रमों से ही पता चल जाएगा। प्रत्येक आर्यसमाज का आय-व्यय विवरण व सदस्य संख्या कितनी है उसमें से कितने लोग वेद व आर्यसमाज के विषय में ज्ञान रखते हैं या जो आर्यसमाजी घर में मूर्तियों की पूजा करते और सन्ध्या हवन घर पर नहीं होते और न ही उनका विशेष स्वाध्याय ही होता है ऐसे बहुत से लोग जो गंगा पर गए तो गंगादास हो गये जमुना पर गए तो जमुनादास कहलाने लगते हैं। धूमपान, मद्यपान व गुटखा, पान तम्बाकू तक का घर पर सेवन करते और आर्यसमाजों में पूरे आर्यसमाजी बनकर आ जाते और सबसे अधिक बोलते और लड़ाई झगड़ा तक करने लगते हैं। वेद व वेदप्रचार से ऐसे धूर्तों का कुछ भी लेना-देना नहीं केवल धन हेतु संस्थाओं पर अपनी कुण्डली जमाकर बैठे रहना चाहते हैं ऐसे छद्म लोगों से आर्यसमाज को क्षति उठानी पड़ रही है। जिसके मन में आर्यसमाज के लिए तड़प नहीं जो दयानन्द को हृदय से नहीं मानता, वेद मंत्रों का पाठ व वैदिक साहित्य का स्वाध्याय नहीं करता न ही आर्यसमाज के प्रति सत्यनिष्ठा ही है वह कैसा आर्यसमाजी हो सकता है? श्रद्धालु ही जान सकते हैं।

महर्षि दयानन्द के प्रवचनों व प्रयासों से विरोधी भी उनके आगे नतमस्तक हो जाते थे बुरे आचरण वाले

लोग भी सच्चे आर्य भक्त बन गए हमारे यहां जो लोग यदि इस प्रकार के हैं यदि धन से आए हैं या दुराचारी हो वह अपने आपको बुराईयों को दूर करके आर्यसमाज के सच्चे प्रहरी बन जाएं तो इसको कोई आश्चर्य की बात नहीं। संस्थाओं व आर्यसमाजों में लड़ाई-झगड़े बन्द कर अपना योगदान करें नए सच्चे श्रद्धालुओं को आगे आने दें सभी के लिए स्वाध्याय हेतु प्रोत्साहन देना चाहिए तभी आर्यसमाज को सच्चे अर्थों में पहचान पाएंगे।

आज के समय में हमें आर्यसमाजों की इस स्थिति पर अतिशीघ्र व गहराई से ध्यान देना होगा इसका समाधान करना भी अतिआवश्यक है और इस समस्या का समाधान विद्वान व सन्यासी गण ही कर सकते हैं न्यायालय नहीं। तभी दयानन्द के यह दीप प्रज्ज्वलित हो प्रकाश कर सकते हैं और जो प्रकाश करने वाले हों उनके घर में अन्धेरा होयह भी आश्चर्यजनक ही है।

पता - चन्द्रलोक कालोनी, खुरा २०३१३१

कविता

“जीवन”



हंस कर कटे या कटे रो कर,
यह जीवन तो सारा गुजर जायेगा ॥ रचयिता : मोहनलाल चड्डा

बुरे कामों में ही मन की रहती रुचि,
अच्छी बातें मन को सुहाती नहीं,
है संगत का असर या दोष मन का सदा,
आत्मा बुरी बात कभी भी बताती नहीं ॥
आत्मा के कहने पर जो चल पड़े
जीवन स्वयं ही उसका सुधर जायेगा
हंस कर कटे

कल्पना उनकी करे तो कैसे करे
जो वासना के वशीभूत दानव हो गये
जो भूल गये सब कुछ ही जुनून में
भाव हृदय में उनके सभी सो गये
वो प्यार से नहीं सुधरेंगे मार से
वरना वातावरण कभी न सुधर पायेगा
हंस कर कटे

अभी सत्य बाकी है इस धरा पर
वरना शिराओं में रक्त बहना था मुश्किल

धर्म में अभी आस्था शेष है
वरना बात भी अपनी कहना था मुश्किल
ब्रह्मचर्य और ज्ञान अगर साथ है
रुप धरती का फिर से निखर जायेगा
हंस कर कटे

दुनिया में यह तो सबको पता
तमो गुण सब में होते हैं थोड़े
सत्य और धर्म की राह अपनाये
कर्म अपने को सतगुण से ही जोड़े
“मोहन” पवित्र कर्म जब हो जायेगा
तभी मन भी गीत मधुर गायेगा
हंस कर कटे या कटे रो कर,
यह जीवन तो सारा गुजर जायेगा ॥

पता : एमआईजी-॥, १७३, हुडको भिलाई (छ.ग.)

पुण्य स्मरण

छत्तीसगढ़ के भामाशाह-तुलाराम परगनिहा

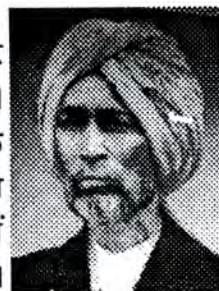
२६ जून प्राकट्य दिवस पर

दानवीर श्री तुलाराम परगनिहा द्वारा दिनांक २६-६-१९२६ को स्त्री शिक्षा, संस्कृत तथा वैदिक शिक्षा के प्रसारण हेतु छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज की स्थापना करते हुए उसे अपना सर्वस्व दान कर दिया था।

तुलाराम परगनिहा के पूर्वज केशवराम खांडकपूर सर्वप्रथम सेवार-कड़ार (बिलासपुर) में आकर बस गये। जलम्रोत के अभाव के कारण वे वहां अधिक दिनों तक निवास नहीं कर सके और अपने परिवार के साथ दुर्ग जिला की ओर प्रस्थान कर गये। उनकी एक शाखा धमधा राज के सीमावर्ती गाँव तारालीम (विकास खंड बेरला) में आकर निवास करने लगा। ये कृषि कार्य में दक्ष थे। १८६३ ई. के भयंकर अकाल के समय नगहा खांडकपूर ने अन्न-धन वितरण कर परगना के लोगों को अकाल मृत्यु से बचाया था। इसलिए धमधा के तत्कालीन राजा भवानी सिंह ने उनके उदार सेवा भाव के कारण “परगनिहा” की उपाधि से नवाजा था। तब इसका वंश परगनिहा उपजाति के नाम से जाने जाना लगा।

इस संदर्भ में अवगत हो कि केशवराम खांडकपूर के वंश में तुलाराम जी परगनिहा आठवीं पीढ़ी संतान थे। सन् १८६३ में राय साहेब पीताम्बर सिंह परगनिहा के परिवार में ग्राम भिभौरी, जिला दुर्ग में इनका जन्म हुआ। अपने पिता की चार संतानों में इनका क्रम दूसरा था। परगनिहा परिवार मनवा कूर्मि के नाम से जाना जाता है। आज इनका वंश दुर्ग एवं रायपुर जिले में विस्तृत है। तुलाराम परगनिहा की प्रारम्भिक शिक्षा रायपुर में हुई। बचपन से वे मेधावी छात्र रहे। परिवार की धार्मिक पृष्ठभूमि के कारण इन्हें आगे अध्ययन के लिये धर्म नगरी इलाहाबाद भेजा गया। जहाँ से इन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त किया और छत्तीसगढ़ का प्रथम स्नातक होने का गौरव प्राप्त किया। तुलाराम परगनिहा ने शासकीय सेवा करने का निश्चय किया। सन् १९०५

(४२ वर्ष की उम्र) में वे तहसीलदार के पद पर सागर में पदस्थ हुए। अपनी शिक्षा व शासकीय सेवा के दौरान अनेक महापुरुषों के सान्निध्य में आये और सेवाभावी संस्थाओं से निकट का संबंध बनाये रखा।



इस समय हमारे देश में धार्मिक व सामाजिक सुधार आन्दोलन अपना प्रभाव स्थापित करने लगा था। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात और पंजाब में महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनैतिक शक्ति बन गया था। उसकी एक शाखा सीपी (मध्यप्रदेश) एवं बरार के नाम से नागपुर में स्थापित हो गई। दुर्ग के प्रसिद्ध मालगुजार एवं वकील धनश्यामसिंह गुप्त को इस प्रतिनिधि सभा का प्रधान नियुक्त किया गया। तुलाराम ने इन संस्थाओं के प्रमुखों से सतत् संपर्क बनाये रखा और संस्था के कार्यों से प्रभावित होते हुये स्त्री शिक्षा के लिए सर्वस्व दान कर दिये।

सोनाखान की जमींदारी को ब्रिटिश राज्य सम्मिलित करने के पश्चात् गोल्ड माइनिंग कंपनी ने खरीद लिया था, परन्तु व्यवसायिक दृष्टि से यह उनके लिए हानिकारक साबित हुई। इसलिए उन्होंने इसे बेचने का निर्णय लिया। सन् १९२० ई. में इनके पिता राय साहेब पीताम्बर सिंह परगनिहा ने इस कंपनी के पार्टनर जेम्स हंडरसन से कलकत्ता जाकर भेंट की। वीशब कॉटन स्कूल हावड़ा के छात्रावास में सोनाखान जमींदारी का सौदा निश्चित हुआ और उन्होंने इस जमींदारी के २२ गांव १८ हजार रुपये में खरीद लिये।

तुलाराम परगनिहा की दो पत्नियाँ थीं। महासिर बाई एवं कलावती बाई। इनकी दो संतानें थीं। एक लड़की गुरुदेवी और एक पुत्र मोक्षेन्द्र नाथ हुआ। अल्पायु में ही पुत्र

के कालकवलित (मृत्यु) हो जाने के बाद, वे पुत्र वियोग में बीमार रहने लगी। उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह कविराज जगदीशचन्द्र बघेल संकरी (बलौदाबाजार) के साथ कर दिया। शासकीय सेवा से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् उनका मन विचलित रहने लगा और अपने परिवार सहित सन् १९२५ ई. में पैतृक गांव छोड़कर कूरा (धरसीवा) जिला रायपुर आ गये। इनका झुकाव प्रारंभ से ही आर्यसमाज की ओर था और अब उन्होंने निश्चय किया कि अपनी पूर्ण सम्पत्ति को राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप संस्कृत शिक्षा, स्त्री शिक्षा, वैदिक धर्म प्रचार और अनाथ सेवा में समर्पित कर देगे। कूरा आने के पश्चात् वे दाऊ घनश्यामसिंह गुप्ता के अधिक निकट आये, जो आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. और बरार के प्रधान थे। उन्होंने संकल्प लिया कि वे समाज सुधार और छत्तीसगढ़ में स्त्री शिक्षा प्रचार करने अपनी सारी सम्पत्ति आर्यसमाज को दान कर देगे। इस आशय का उन्होंने अंतिम वसीयत कर दिया। अपनी इस अंतिम इच्छा को पूर्ण करने के लिए पैतृक सम्पत्ति का बंटवारा लिया और कूरा ग्राम को ३० हजार रुपये में खरीदा।

तुलाराम परगनिहा समाज के उपेक्षित और पिछड़े वर्ग के उत्थान के साथ-साथ अनाथों के प्रति सहानुभूति रखते थे। छत्तीसगढ़ में स्त्री शिक्षा का विकास करना ही उनका प्रमुख लक्ष्य था। इसलिए ६३ वर्ष की आयु में उन्होंने सोनाखान जमींदारी के चार गांव चनाट, कसौंदी, भुसड़ीपाली, बोदापाली की कुल सम्पत्ति एवं ५५ सौ एकड़ जमीन, ढनढनी का पूरा गाँव, लवन का २५ प्रतिशत, कूरा की पूरी सम्पत्ति एवं ३५० एकड़ भूमि, इसके अतिरिक्त ढाबा, कुम्ही और बोरिया प्रत्येक की २५ प्रतिशत सम्पत्ति उद्देश्य पूर्ति के लिए आर्यसमाजी संस्था को दिनांक २६ जून १९२६ को दान देकर वसीयत कर दिया। अपनी एकमात्र पुत्री गुरुदेवी के मुरहुठी गांव का सात आना जो उनके हिस्से में था, जीविकोपार्जन के लिए दे दिया। उन्होंने कुल स्थावर एवं जंगम जायजाद का पूरा-पूरा मालिकाना हक श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. एवं बरार को देकर पैतृक निवास भिभौरी की जायजाद को अपनी दोनों पत्नियों के परवरिश के लिये छोड़ दिया। इस तरह प्रथम स्नातक होने के साथ-

साथ छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज के संस्थापक बन गये।

छत्तीसगढ़ में ऐसे बहुत कम लोग हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व त्याग कर निःस्वार्थ भाव से छत्तीसगढ़ का विकास चाहा हो। संस्कृत शिक्षा के प्रति उनकी विशेष आस्था था। स्त्री शिक्षा के वे जबरदस्त पक्षधर थे। अनाथ बच्चों के प्रति उनके मन में दया का भाव विद्यमान था। इसलिए अपनी वसीयत में अपनी अंतिम इच्छा इस प्रकार व्यक्त किया - “मेरी यह प्रबल इच्छा है कि मेरी जायदाद किसी व्यक्ति विशेष के उपयोग में न आवे और कोई व्यक्ति विशेष उसका स्वामी नहीं हो, बल्कि मेरी यह प्रेरणा है कि मेरी सम्पूर्ण जायदाद किसी पुण्य कार्य में लग जावे और ऐसी संस्था के स्वामित्व में जावे जो कि सुसंस्कृत विद्या दान, स्त्री शिक्षा, गुरुकुल, अनाथ रक्षा आदि के लिए प्रयत्न करती हुई वैदिक धर्म का प्रचार व विस्तार में लगी रहती है। सब बातों को अच्छी तरह सोचकर और बहुत विचार के बाद मैंने यह पक्का निश्चय किया है कि मेरी जायजाद मेरे मरने के बाद आर्यसमाजी संस्था को जावे।”

अपनी इच्छा को मूर्तरूप प्रदान करने का दायित्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं जालंधर कन्या महाविद्यालय के संचालकों पर छोड़ दिया कि वे इस जायदाद से छत्तीसगढ़ के किसी स्थान में कोई विद्या दान की संस्था, स्त्री शिक्षा के लिए विद्यालय जालंधर कन्या विद्यालय के नमूने पर चलावें। इस प्रकार छत्तीसगढ़ के इस सपूत ने छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज की नींव डाली। दिनांक २६ जून १९२६ ई. मिति जेठ सुदी १४, संवत् १९८३ के दिन उनके वसीयत पर हस्ताक्षर हुए। गवाह के रूप में उनके भाई दाऊ उदयराम परगनिहा एवं सोनपैरी वाले हेमनाथ ब्राह्मण मालगुजार के हस्ताक्षर के साथ घनश्यामसिंह गुप्ता दुर्ग ने आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. विदर्भ की ओर से हस्ताक्षर किया। यह वसीयत ३ जुलाई १९२६ को विधिवत पंजीकृत हुआ। इसके कुछ समय बाद ही २५ अगस्त १९२६ को तुलाराम जी परगनिहा का स्वर्गवाश हो गया।

उनकी इच्छा के अनुरूप आर्य प्रतिनिधि सभा ने दुर्ग में दाऊ तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना की, जो आज कन्या महाविद्यालय के रूप में संचालित है।

छत्तीसगढ़ शासन द्वारा ग्राम उतई जिला दुर्ग में दानवीर तुलाराम जी परगनिहा की स्मृति में महाविद्यालय संचालित किया जा रहा है।

वर्तमान में लवन, कूरा, ढाबा एवं कुम्ही में लगभग ६०० एकड़ जमीन एवं सभा बाड़ा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के आधिपत्य में कृषि कार्य संपादित करते हुए तुलाराम परगनिहा के नाम पर कन्या विद्यालय संचालित कर रही है। दिनांक १ नवंबर २००० को मध्यप्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण होने के पश्चात दिसंबर २००३ से विधिवत छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन किया जाकर विगत १३ वर्षों से संस्था सुचारु रूप से संचालित हो रही है। आर्यसमाज संगठन के शिरोमणी संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्कालीन सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य द्वारा प्रमाण पत्र

देते हुए, छत्तीसगढ़ प्रान्त स्थित दानवीर तुलाराम परगनिहा द्वारा प्रदत्त समस्त चल-अचल सम्पत्ति एवं आर्यसमाजों के प्रबंधन का सम्पूर्ण अधिकार छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया है। दानवीर तुलाराम जी परगनिहा की स्मृति में आयोजित प्राकट्य दिवस दिनांक २६ जून २०१७ को सभा बाड़ा कूरा में मनाये जाने का निश्चय किया गया है।

इस अवसर पर सभा बाड़ा कूरा (धरसीवा) में विश्व कल्याण महायज्ञ प्रवचन, संगीतमय भजनोपदेश का एक दिवसीय आयोजन किया जायेगा, जिसमें “सुरता तुलाराम जी परगनिहा आर्य” प्रस्तुत किया जायेगा। दानवीर के परिवार के निकट सम्बन्धियों का सम्मान किया जायेगा एवं ऋषि लंगर का आयोजन किया जायेगा।

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री

महिला योग जागृति शिविर

(केवल १५ से ४० वर्ष की महिलाओं के लिए)

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड़ में ज्येष्ठ शुक्ल १४ से आषाढ़ कृ. २ वि.सं. २०७४ तदनुसार ८ जून से ११ जून तक ४ दिन के महिला योग जागृति शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरार्थी ७ जून को सायंकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जायें। शिविर समापन ११ जून २०१७ मध्याह्न लगभग १ बजे होगा। शिविर में योग सिखाने के साथ-साथ यम-नियम, आसन-प्राणायाम आदि अनेक विषयों पर मार्गदर्शन दिया जाएगा। साथ ही परिवार को प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, त्याग-तपस्या आदि गुणों से युक्त स्वर्ग कैसे बनाया जाए इन बातों पर व्यावहारिक ज्ञान भी दिया जायेगा। शिविर दिनचर्या प्रातः ५ से रात्रि ८ बजे तक रहेगी।

प्रशिक्षिकाएँ : श्रीमती जयाबेन जी पटेल, श्रीमती राज मल्होत्रा जी, आचार्या शीतल जी आर्या तथा अन्य
आशीर्वाद व प्रेरणा : स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक, आचार्य ज्ञानेश्वर जी

शिविर शुल्क ५०० रु. कृपया निम्न बैंक खाते में जमा करावें।

नाम : क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर २०१७, खाता क्र. 01790100018052

शाखा : बैंक ऑफ बड़ौदा, धनसुरा (जि. अरवल्ली) आईएफएससी नं. BARBODHANSU

अहमदाबाद एस.टी. बस स्टैंड से धनसुरा, मोड़ासा की ओर जाने वाली बस में बैठकर रोजड़ गांव उतरें। वहां से पुंसरी रोड पर लगभग डेढ़ किलो मीटर दूर आर्यवन है। अहमदाबाद से आर्यवन (रोजड़) लगभग ७० कि.मी. दूर है।

देशभक्तों के अश्वत्थः पं. रामप्रसाद बिस्मिल

मधुर स्मृति

जन्म : ११ जून १८९७

रामप्रसाद बिस्मिल भारत के महान् क्रान्तिकारी थे जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। उनका जन्म ११ जून सन् १८९७ को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर शहर में हुआ था। उनके पिताश्री मुरलीधर, शाहजहाँपुर नगरपालिका में काम करते थे। १९ दिसम्बर सन् १९२७ को बेरहम ब्रिटिश सरकार ने गोरखपुर जेल में फांसी पर लटकाकर उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी।



रामप्रसाद बिस्मिल के दादाजी नारायणलाल का पैतृक गांव बरबई तत्कालीन ग्वालियर राज्य में चम्बल नदी के बीहड़ों में बसे तत्कालीन तोमरधार क्षेत्र किन्तु वर्तमान मुरैनाजिले में आज भी है। बरबई ग्रामवासी बड़े ही उद्दण्ड प्रवृत्ति के व्यक्ति थे जो आये दिन अंग्रेजों व अंग्रेजी आधिपत्य वाले गाम वासियों को तंग करते थे। पारिवारिक कलह के कारण नारायणलाल ने अपनी पत्नी विचित्रादेवी व दोनों पुत्रों मुरलधर एवं कल्याणमल सहित अपना पैतृक गांव छोड़ दिया। उनके गांव छोड़ने के बाद बरबाई में केवल उनके दो भाई अमानसिंह व समान सिंह ही रह गये। उनके वंशज आज भी उसी गांव में रहते हैं। केवल इतना परिवर्तन हुआ है कि बरबई में रामप्रसाद बिस्मिल की एक भव्य प्रतिमा स्थापित कर दी गयी है।

काफी भटकने के पश्चात् यह परिवार शाहजहाँपुर आ गया। शाहजहाँपुर में मुन्नूगंज के फाटक के पास स्थित अतार की दुकान पर मात्र तीन रुपये मासिक में नारायणलाल ने नौकरी करना शुरू कर दिया। भरे-पूरे परिवार का गुजारा न होता था। मोटे अनाज, बाजरा, ज्वार, सामा, ककुनी को राँध (पका) कर खाने पर भी काम न चलता था। फिर बथुआ या ऐसा ही कोई साग आदि आटे में मिलाकर भूख शान्त करने का प्रयास किया गया। दोनों बच्चों को रोटी बनाकर दी जाती किन्तु पति-पत्नी को आधे भूखे पेट ही

गुजारा करना होता। ऊपर से कपड़े-लत्ते और मकान किराये की विकट समस्या तो थी ही।

बिस्मिल की दादीजी विचित्रा देवी ने अपने पति का हाथ बटाने के लिये मजदूरी करने का विचार किया किन्तु अपरिचित महिला को कोई भी आसानी से अपने घर में काम पर न रखता था। आखिर उन्होंने अनाज पीसने का कार्य शुरू कर दिया। इस काम में उनको तीन-चार घण्टे अनाज पीसने के पश्चात् एक या डेढ़

पैसा ही मिल पाता था। यह सिलसिला लगभग दो-तीन वर्ष तक चलता रहा। दादीजी बड़ी स्वाभिमानी प्रकृति की महिला थीं, अतः उन्होंने हिम्मत न हारी। उनको पक्का विश्वास था कि एक-एक एक दिन अच्छे दिन अवश्य आयेगे।

समय बदला। शहर के निवासी शनैः शनैः परिचित हो गये। नारायणलाल थे तो तोमर जाति के क्षत्रिय किन्तु उनके आचार-विचार, सत्यनिष्ठा व धार्मिक प्रवृत्ति से स्थानीय लोग प्रायः उन्हें पण्डितजी ही कहकर सम्बोधित करते थे। इससे उन्हें एक लाभ यह भी होता था कि प्रत्येक तीज त्योहार पर दान-दक्षिणा व भोजन आदि घर में आ जाया करता। इसी बीच नारायणलाल को स्थानीय निवासियों की सहायता से एक पाठशाला में सात रुपये मासिक पर नौकरी मिल गई। कुछ समय पश्चात् उन्होंने यह नौकरी भी छोड़ दी और रेजगारी (इकत्री-दुअत्री, चवन्नी के सिकके) बेचने का कारोबार शुरू कर दिया जिससे उन्हें प्रतिदिन पाँच-सात आने की आय होने लगी। अब तो बुरे दिनों की काली छाया भी छटने लगी। नारायणलाल ने रहने के लिये एक मकान भी शहर के खिरनीबाग मोहल्ले में खरीद लिया और बड़े बेटे मुरलीधर का विवाह अपने ससुराल वालों के परिवार की एक सुशील कन्या मूलमती से करके उसे इस घर में ले

आये। घर में बहू के चरण पड़ते ही बेटे का भी भाग्य बदला और मुरलीधर को शाहजहाँपुर नगर निगम में १५ रुपये मासिक वेतन पर नौकरी मिल गई किन्तु उन्हें यह नौकरी रूचि। अतः उन्होंने त्यागपत्र देकर कचहरी में स्टाम्प पेपर बेचने का काम शुरू कर दिया। इस व्यवसाय में उन्होंने अच्छा खासा धन कमाया। तीन बैलगाड़ियाँ किराये पर चलने लगी व ब्याज पर रुपये उधार देने का काम भी करने लगे। ज्येष्ठ शुक्ल ११ संवत् १९५४ (वि.) को दोपहर ११ बजकर ११ मिनट पर रामप्रसाद का जन्म हुआ। उस दिन अंग्रेजी तारीख ११ जून १८९७ थी। लगभग सात वर्ष की अवस्था से रामप्रसाद को हिन्दी व उर्दू का अक्षर ज्ञान करवाया जाने लगा। मुरलीधर के कुल ९ संतानें हुई जिनमें पांच पुत्रियाँ एवं चार पुत्र थे। रामप्रसाद उनकी दूसरी संतान थे। उनसे पूर्व एक पुत्र पैदा ही मर चुका था। आगे चलकर दो पुत्रियों एवं दो पुत्रों का भी देहान्त हो गया।

बाल्यकाल से ही रामप्रसाद की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। जहाँ कहीं वह गलत अक्षर लिखता उनकी खूब पिटाई की जाती लेकिन उसमें चंचलता व उद्दण्डता कम न थी। मौका पाते ही पास के बगीचे में घुसकर फल आदि तोड़ लेता जिसकी उसकी कसकर पिटाई भी हुआ करती लेकिन वह आसानी से बाज न आता। शायद यही प्राकृतिक गुण रामप्रसाद को एक क्रान्तिकारी बना पाये अर्थात् वह पुराने विचारों में जन्म से ही पक्का था।

लगभग १४ वर्ष की आयु में रामप्रसाद को अपने पिता की सन्दूकची से रुपये चुराने की लत पड़ गई। चुराये गये रुपयों से उसने उपन्यास आदि खरीदकर पढ़ना प्रारम्भ कर दिया एवं सिगरेट पीने व भांग चढ़ाने की आदत भी पड़ गई थी। कुल मिलाकर रुपये चोरी का सिलसिला चलता रहा और रामप्रसाद अब उर्दू के प्रेमरस से परिपूर्ण उपन्यासों व गजलों की पुस्तकें पढ़ने का आदी हो गया था। संयोग से एक दिन भांग के नशे में होने के कारण रामप्रसाद चोरी करते हुए पकड़ गये। सारा भाण्डा फूट गया। खूब पिटाई हुई। उपन्यास व अन्य किताबें फाड़ डाली गई लेकिन रुपये चुराने की यह आदत न छूट सकी। हाँ, आगे चलकर थोड़ी समझ आने पर ही इस अभिशाप से मुक्त हो गये।

रामप्रसाद ने उर्दू मिडिल की परीक्षा में उत्तीर्ण न

होने पर अंग्रेजी पढ़ना प्रारम्भ किया। साथ ही पड़ोस के एक पुजारी ने रामप्रसाद को पूजा-पाठ की विधि का ज्ञान करवा दिया। पुजारी एक सुलझे हुए विद्वान व्यक्ति थे जिनके व्यक्तित्व का प्रभाव रामप्रसाद के जीवन पर दिखाई देने लगा। पुजारी के उपदेशों के कारण रामप्रसाद पूजा-पाठ के साथ ब्रह्मचर्य का पालन करने लगा। पुजारी की देखा-देखी उसने व्यायाम भी प्रारम्भ कर दिया। पूर्व की जितनी भी कुभावनाएँ एवं बुरी आदतें मन में थीं वे छूट गई। मात्र सिगरेट की लत रह गई थी जो कुछ दिनों पश्चात् उसके एक सहपाठी सुशीलचन्द्र सेन के आग्रह पर जाती रही। अब तो रामप्रसाद का पढ़ाई में भी मन लगने लगा और बहुत वह बहुत शीघ्र ही अंग्रेजी के पांचवे दर्जे में आ गया।

रामप्रसाद में अप्रत्याशित परिवर्तन हुआ। शरीर सुन्दर व बलिष्ठ हो गया था। नियमित पूजा-पाठ में समय व्यतीत होने लगा था। तभी वह मन्दिर में आन वाले मुंशी इन्द्रजीत के सम्पर्क में आया जिन्होंने रामप्रसाद को आर्यसमाज के सम्बन्ध में बताया 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने का विशेष आग्रह किया। 'सत्यार्थ प्रकाश' के गंभीर अध्ययन से रामप्रसाद के जीवन पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित सुप्रसिद्ध गीत वन्दे मातरम् की लोकप्रियता के बाद भारतवर्ष के महान् क्रान्तिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल की गजल सरफरोशी की तमन्नल ही वह अमर रचना है जिसे गाते हुए कितने ही देशभक्त फाँसी के तख्ते पर झूल गये।

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है ?
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्माँ !
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है ?

सौजन्य - ऋषि कुमार आर्य, रायगढ़

जवानी वह कि तूफान को रफ्तार देती है।
जवानी जिन्दगी को मौज का अधिकार देती है।
गया डर जो, बुढ़ापा ही कहो, उसकी जवानी को।
जवानी मौत की भी हो, निडर ललकार देती है।

हम सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें ?

स्वामी दयानन्द कृत अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश वेदों के असीम ज्ञान रुपी सागर का मंथन कर प्राप्त हुए अमृत के समान हैं, जिनकी रचना का मुख्य उद्देश्य इस महान् आर्यावर्त देश में फैली अज्ञानता, अन्धविश्वास, दुराचार को समाप्त कर वेदों के पवित्र ज्ञान, धर्म की सत्य परिभाषा और आचरण को, पुनः इस पावन धरा पर स्थापित करना था। मुझसे पूछता है कि सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने से आपके जीवन में सबसे बड़ा परिवर्तन क्या हुआ ? तो मेरी यही उत्तर होगा कि सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने से मेरी मनोवृत्ति जो पहले धर्मभीरु, असुरक्षित और सीमित सोच वाली थी वही अब जागृत, प्रगतिशील, गर्वित एवं क्रान्तिकारी सोच वाली बन गयी है। स्वामी दयानन्द जी को सत्यार्थ प्रकाश की रचना करने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? स्वामी दयानन्द जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सत्य और ईश्वर की खोज में लगाया। अपने जीवन में उन्होंने हिन्दू (आर्य) जाति को अनेक प्रकार की विपत्तियों में घिरे हुए देखा। एक ओर देश में विदेशी अंग्रेजों का राज्य था दूसरी ओर देशी राजा आत्म सम्मान और जाति गौरव भूल कर या तो अंग्रेजों के पिदतू बन कर नशे के सागर में डूबे हुए थे। एक ओर वैदिक धर्म का स्वरूप लुप्त होकर धर्म के नाम पर पाखण्ड, अन्धविश्वास, जातिवाद, नारी जाति की दुर्गति ने ले लिया था, दूसरी ओर आर्य जाति के होनहारों को फुसला-बहका कर विधर्मी बनाने के व्यापक प्रयास चल रहे थे। जिस देश में वीर हनुमान, बलराम, भीम जैसे वीर हुए थे, उस देश की प्रजा मिथ्या भूतों, ग्रह दशा, अपनी-पराई से डरने लगी थी। कभी विश्व में धर्म गुरु कहलाने वाला भारत देश विधर्मियों के थपेड़ों में सहते-सहते इतना क्षीण हो चुका था कि उसकी डूबती नैया का ईश्वर ही केवल मात्र सहारा था। ऐसे में सत्यार्थ प्रकाश की रचना कर स्वामी दयानन्द ने अनेक पुस्तकों के सन्दर्भ और अपने अव्वक तर्कों से धर्म सम्बन्धित अनेक जिज्ञासाओं और भ्रान्तियों का निवारण किया। सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से जगाया और सर्वथा भुला दिए गए इन वैदिक मंतव्यों की पुनः स्थापना हुई।

सत्यार्थ प्रकाश की विषय वस्तु :- (१) सामाजिक एकता की स्थापना - जाति से हम सब की केवल एक जाति है और वह है मनुष्य, कोई भी ऊँचा-नीचा अथवा अछूत नहीं है। वर्ण मनुष्य के जन्म के आधार पर नहीं अपितु उसके गुणों के आधार पर हैं। (२) नारी जाति का उद्धार :- नारी जाति को शिक्षित करने का, पुनर्विवाह करने का, वेदादि धर्म शास्त्र पढ़ कर विदुषी बनने का और समाज में सबसे श्रेष्ठ पद “माँ” कहलाने का पूरा अधिकार है और दहेज प्रथा, ताड़ना, बाल विवाह, सत्ती प्रथा आदि कुरीतियाँ हैं। (३) शुद्धि संस्कार को पुनर्जीवित करना :- जो हमारे भाई हिन्दू जाति से किसी भी कारण से विमुख हो गए थे उन्हें शुद्ध कर वापिस वैदिक धर्मी बनाना। (४) गौ माता आदि कल्याणकारी पशुओं को जल्लादों के हाथों से बचाकर उनके लिए गौशाला आदि की स्थापना करवाना। (५) विदेशी शासकों से देश को स्वतंत्र करवाने के लिए स्वदेशी राज्य और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का आह्वान करना। (६) यह हमारा देश आर्यावर्त अपने वैदिक संस्कारों के कारण समृद्ध था और इसी कारण से इसे स्वर्ण भूमि कहा जाता था और आर्य लोग कहीं बाहर देश से आकर यहां नहीं बसे थे अपितु यही के नागरिक थे ऐसा सिद्ध कर देश को बांटने के कुचक्र का विरोध करना। (७) चारों वेद में कहीं भी यज्ञ में पशु बलि आदि का न होना एवं यज्ञ का अर्थ केवल कर्मकाण्ड न होकर श्रेष्ठ कर्म होना। (८) मांस भक्षण का विरोध करना और शाकाहार से ब्रह्मचर्य का पालन कर शारीरिक शक्ति को बढ़ाने का सन्देश। (९) श्राद्ध शब्द का अर्थ मृत्यु पश्चात् भोजन न होकर जीवित माता-पिता की मान-सम्मान के साथ सेवा करना। (१०) ईश्वर के नाम की उचित व्याख्या कर अनेक ईश्वरवाद के स्थान पर वेदों में वर्णित एकेश्वरवाद का सन्देश। (११) फलित ज्योतिष, जन्म पत्री, माथा-हस्तरेखा, ग्रहदशा आदि अन्धविश्वासों से मुक्ति दिलवाना। (१२) भारत देश में फैले हुए अनेक मत-मतमत्तान्तरों की तर्कपूर्ण समीक्षा कर उन्हें वेद विरुद्ध घोषित करना। (१३) नास्तिकता एवं नास्तिक मतों पर गंभीर विवेचना कर जीवन को भोगवादी होने से बचाना। (१४) संसार में प्रथम बार ईसाइयत एवं इस्लाम की मान्यताओं की समीक्षात्मक व्याख्या कर वैदिक धर्म को मानव रचित मतों से श्रेष्ठ सिद्ध करना।

- डॉ. विवेक आर्य

यहाँ संक्षेप में सत्यार्थ प्रकाश की कुछ मान्यताओं के विषय में बताया गया है।

अधिक जानकारी के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ “सत्यार्थ प्रकाश” पढ़ें।

अनमोल ग्रन्थ “सत्यार्थ प्रकाश” मूल्य ५० रुपये को प्रचारार्थ रियायती मूल्य पर मात्र २०/- रुपये में सभा कार्यालय :

दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) से प्राप्त करें। - दीनानाथ वर्मा मंत्री, मोवा. ९८२६३६३५७८

**आरोग्य
जगत**

गर्मी के कारण होने वाली बीमारियाँ

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

(होमियोपैथिक चिकित्सक)

मोबा. : ९८२६५१९८३, ९४२५५१५३३६



गर्मी का मौसम शुरू होते ही बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है। अगर आपने थोड़ी सी लापरवाही कर दी तो लू, हीट स्ट्रोक, पेट की समस्या, अतिसार आदि कई बीमारियों की चपेट में आसानी से आ सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि गर्मी के मौसम में इन बीमारियों से बचने के तरीके आजमाये जायें। आपकी थोड़ी सी सावधानी इन बीमारियों से बचाव कर सकती है।

गर्मी और लू का गहरा संबंध है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे लोग लू का शिकार होने लगते हैं। गर्मी के बढ़ते ही लोगों को लू का डर सताने लगता है। बढ़ती गर्मी में लू से बचना जरूरी है। गर्मी में लू से बचने के लिए अलग-अलग उपाय करना बेहद जरूरी है। आइए जाने गर्मी में लू से कैसे बचें। निम्न टिप्स को अपनाकर गर्मी में लू से बचा जा सकता है।

लू से बचने के लिए गर्मी के मौसम में सावधानी बरतना बहुत जरूरी है। इसके लिए अधिक धूप में घर से बाहर न निकले। यदि निकलना जरूरी है तो पूरी तरह अपने को ढक कर रखें या फिर टोपी, चश्मा, छतरी इत्यादि का प्रयोग करें। गर्मी बहुत ज्यादा रेशमी, डार्क या चटकीले वस्त्र न पहनते हुए सूती व हल्के रंग में कपड़े पहने। इतना ही नहीं बहुत अधिक टाइट कपड़े न पहनें। गर्मी में लू से बचने के लिए जरूरी है कि खूब पानी पीएं। चाय-काफी के बजाय समय-समय पर नींबू पानी, सोडा, शिकंजी, लस्सी, शर्बत इत्यादि को अधिक प्राथमिकता दें। धूप से आकर एकदम ठंडा पानी न पीएँ।

तैलीय पदार्थों के बजाय पेय पदार्थों को अधिक लें। दिन में कम से कम दो बार ठंडे पानी से स्नान करें। गर्मी में बहुत अधिक देर रहने या घूमने-फिरने से लू लग जाती है। जिन लोगों का इम्यून सिस्टम कमजोर होता है या फिर बूढ़े, बच्चों या किसी अन्य बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को लू

लगने का अधिक खतरा रहता है। इसलिए

इन लोगों को अधिक देर तक धूप में रहने

से बचना चाहिए। गर्मी के मौसम में तन को अधिक से अधिक समय तक धूप में रहने से बचना चाहिए। गर्मी के मौसम में तन को अधिक से अधिक ढककर रखें। तेज धूप में नंगे पांव न रहें। पेय पदार्थों में थोड़ा नमक मिलाकर पीने से लू से बचने में सहायता मिलती है। खाली पेट गर्मी में बाहर न निकलें। बहुत अधिक भीड़ वाली जगहों या गर्मी वाले क्षेत्रों में न जाएं।

होमियोपैथी उपचार : लू व गर्मी के बीमारियों से बचने के लिये कई होमियोपैथी औषधियां हैं। जो लक्षणों के आधार पर सेवन करने पर तुरन्त लाभ पहुंचाती हैं। अपने नजदीकी होमियोपैथी चिकित्सक से सम्पर्क कर ईलाज कराना चाहिए।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, भारत माता स्कूल के सामने, टाटीबंध रायपुर (छ.ग.)

गुरुकुल स्नातक सम्मेलन

नूँआपाली। पश्चिम ओड़िशा व पड़ोसी राज्यों के परिवारों में वैदिक विचारधारा को जीवंत रूप प्रदान करने के उद्देश्य से दिनांक ११-५-२०१७ को नवप्रभात आश्रम नूँआपाली में गुरुकुल स्नातक सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें समस्त गुरुकुलों के लगभग ५० स्नातकों-स्नातिकाओं ने भाग लिया। सर्वसम्मति से गुरुकुल स्नातक परिषद नाम का प्रस्ताव हुआ। उक्त परिषद के सभी सदस्यों ने समाज के सामने आने वाली समस्याओं व उनके समाधान हेतु वैदिक विचारधारा के अनुरूप अपने बहुमूल्य सुझाव रखे। दिनांक १०-६-१७ को गुरुकुल हरिपुर में अगली बैठक करने का निर्णय लिया गया। **संवाददाता : कार्या. न.प्र.गु.आ. बरगढ़**

आमसेना । आज से ५० वर्ष से पूर्व उड़ीसा के नवापारा जिले में गुरुकुल आमसेना की स्थापना १९६८ ई. में आर्य जगत् के तपस्वी पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने हरियाणा से आकर की थी। अब तक इस संस्था से हजारों छात्र-छात्राएँ स्नातक बन चुके हैं बहुत सारे स्नातक शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय रोहतक से स्वर्ण पदक प्राप्त कर चुके हैं।

इस वर्ष भी इस परम्परा को गौरव प्रदान किया गुरुकुल के निम्न होनहार मेधावी छात्रों ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से स्वर्ण पदक प्राप्त करके गुरुकुल का गौरव बढ़ाया है। यहां व्याकरण, दर्शन, साहित्य, आदि विभिन्न विषयों में प्रथमा से लेकर एम.ए. (आचार्य) तक विद्याध्ययन की पूर्णतः निःशुल्क व्यवस्था एक तपस्वी, सन्यासी द्वारा की जा रही है। इसी का प्रतिफल है कि आचार्य मनुदेव (व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य), ब्र. निरंजन आर्य (व्याकरणाचार्य), ब्र. राकेश आर्य (व्याकरणाचार्य), आदर्श कन्या गुरुकुल की आचार्या सुश्री पुष्पा जी (वेदाचार्य), ममता जी (व्याकरणाचार्य), गीता जी (साहित्याचार्य) आदि को हरियाणा के महामहिम राज्यपाल ने अपने कर कमलों से स्वर्ण पदक प्रदान करके सम्मानित किया है। इस कीर्तिमान के लिए छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार की ओर से उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

संवाददाता : स्वामी ब्रतानन्द सरस्वती, आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना



सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रिय शिविर

दिनांक ५ जून से २० जून २०१७ तक

स्थान - गुरुकुल पौन्धा, देहरादून (उत्तराखण्ड)



सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत सरस्वती की अध्यक्षता में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। प्रवेशार्थी आर्यवीर दल या आर्यसमाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, २ फोटो एवं पहले उत्तीर्ण परीक्षा के प्रमाण पत्र की प्रतिलिपि साथ लेकर आयें। शिविर के अनुशासन का पूर्णतः पालन करना होगा। अनुशासन भंग करने पर शिविरार्थी को शिविर से पृथक् भी किया जा सकता है।

प्रवेश शुल्क ५००/- रु. (पाठ्यपुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेगी।)

नोट :- (१) शिविर में आर्यवीर श्रेणी उत्तीर्ण को ही दिया जायेगा। शिविरार्थी की योग्यता मैट्रिक उत्तीर्ण होनी चाहिये। शिविर में प्रथम श्रेणी को प्रवेश नहीं मिलेगा। (२) ११ जून को मध्य परीक्षा होगी जिसमें उत्तीर्ण आर्यवीर को अगली श्रेणी का प्रशिक्षण दिया जायेगा। उत्तीर्ण न होने वाले आर्यवीर जिस श्रेणी में है उसी का प्रशिक्षण लेते रहेंगे। (३) शिविर में सन्ध्या-यज्ञ एवं प्राथमिक चिकित्सा तथा व्यक्तित्व विकास का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा।

मार्ग :- देहरादून रेलवे स्टेशन या बस स्टैंड से बल्लूपुरा चौक, प्रेमनगर, नन्दा की चौकी से पौन्धा ग्राम जाने वाले वाहन से गुरुकुल पौन्धा पहुंचे।

धनञ्जय आचार्य
शिविर संयोजक
९४१११०६१०४

नन्दकिशोर शास्त्री
प्रधान व्यायाम शिक्षक
९४६६४३६२२०

सत्यवीर आर्य
म.मं. सा.आ.वी.द.
९४१४७८९४६१

स्वामी प्रणवानन्द
संरक्षक
९८६८८५५१५५



॥ ओ३म् ॥

गाँव गाँव यज्ञ, हर गाँव यज्ञ



छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
संभागीय आर्यसमाजों के संयुक्त तत्वावधान में
सघन वेद प्रचार महाभियान एवं
आर्यसमाजों का वार्षिक उत्सव
दिनांक 21 अप्रैल 2017 से 19 जून 2017 तक

वेद प्रचार महाभियान

आज वेदों के पठन पाठन अवरुद्ध होने से अविद्या अपने चरम पर है अतः आर्यसमाज का उद्देश्य एवं लक्ष्य है विद्या की वृद्धि एवं अविद्या का नाश इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु आवश्यक है वेदों का संदेश जन-जन तक पहुंचे। विद्या की वृद्धि से गहन अंधकार में भटकते अज्ञान से भरे लोगों को नयी दिशा मिलेगी लोग अनाचार छोड़ सदाचारी बनेंगे। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रयास है कि जन-जन तक पूरे प्रांत में सघन वेद प्रचार हो। इसका आरम्भ रायगढ़ संभाग से हो रहा है आप सभी से निवेदन है कि इस पावन कार्य में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर तन-मन-धन से सहयोगी बन वेदों की रक्षा जैसे पावन कृत्य में सहभागी बनें।



-: आमंत्रित विद्वान :-

आचार्य अंशुदेव आर्य, प्रधान, छ.ग. प्रां.आ.प्रति. सभा
आचार्य जगबन्धु शास्त्री, रायगढ़, पं. मुकेश शास्त्री, रायपुर



निवेदक : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं रायगढ़ संभागीय समस्त आर्यसमाजें

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा। पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

एक रूप पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न



दिल्ली । 23 से 27 मई 2017 तक चले एक रूप पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर में जोकि आर्य समाज प. पंजाबी बाग एवं एम एम आर्य पब्लिक स्कूल में सम्पन्न हुआ । इस शिविर में 74 आर्य सदस्यों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । डॉ. ऋषि पाल शास्त्री जी ने वेद मन्त्रों के उच्चारणों के अभ्यास द्वारा शोधन किया तथा इस विधि को विस्तार से समझाया । श्री विनय आर्य ने यज्ञ की हर क्रिया-प्रक्रिया की विस्तार से चर्चा की तथा उचित-अनुचित समझाते हुए, बिना किसी विरोधाभास के इस शिविर को सफल बनाते हुए यज्ञ पर वैज्ञानिक शोधों का विश्लेषण यज्ञ में प्रयोग होने वाले तत्वों का उचित प्रयोग से महत्त्व व प्रयासद्ध पर हर सम्मिलित सदस्य को जानकारी दी जिसका प्रदर्शन श्री विरेन्द्र सरदाना कार्यकारिणी प्रधान पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, मंच पर बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत कर रहे थे । सामग्री में प्रयोग होने वाली औषधीय व तत्वों की प्रदर्शनी भी लगाई गई ।

इस शिविर के महत्त्व को जानने, समझते व देखने हेतु आर्य जगत की विभिन्न गणमान्य सदस्य अपनी शुभकामना सहित पधारे जिनमें श्री प्रकाश आर्य, महामंत्री सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, डॉ. ममता सकसेना, श्रीमती ज्योति गुलाटी, एम.डी. एच. गुप, आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़, श्री सत्यानन्द आर्य, श्री जितेन्द्र बनाती, श्री शत्रुघ्न लाल रांची, डॉ. कमल नारायण, श्री अजित कुमार धवन, श्री अशोक महतानी, श्रीमती नंदिता नागपाल, आचार्य देव शर्मा, आचार्य आनन्द स्वरूप, श्री शिव कुमार मदान, श्री अजय तनेजा, श्री मेदन्ता, श्री सुबोध जिन्दल, श्री एस.पी. सिंह । इस शिविर के सफल बनाने में श्री नीरज आर्य सहसंयोजक, श्री योगेन्द्र आर्य, श्री विजेन्द्र आर्य, श्री अरविन्द नागपाल, श्री सुरेन्द्र चौधरी, श्री सन्दीप आर्य का विशेष योगदान रहा । इस शिविर में भाग लेने वाले सभी आर्यजनों की जलपान व सुविधाओं की एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल की मैनेजमेंट व कार्यकर्ताओं का योगदान सराहनीय रहा उनको साधुवाद । शिविर में पधारे सभी आर्यजनों का धन्यवाद श्री सतीश चड्ढा, शिविर संयोजक ने किया ।



के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।



मसाले
असली मसाले
सच-सच



महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015, 011-41425106 - 07-08 www.mdhspices.com

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001